हिन्दी मासिक

सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

नवम्बर, 2004 वर्ष 3 अंक 9

जो क़ौम सिर्फ फ़त्ह की लज़्ज़त से आशना होती है उस की सलाहियत (योग्यता) पर ज़ियादा भरोसा नहीं किया जा सकता कौमों की तर्बियत के लिये दोनों तजरिबे ज़रूरी हैं। ख़ुदा ने अपने महबूब पैग़म्बर और उनके बर्गुज़ीदा असहाब (उत्तम साथी) को इन दोनों रास्तों से गुज़ारा है।

(मौलाना अबुल हसन अली हसनी)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका **वार्षिक** चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना **वार्षिक** चन्दा जल्द भेजिए।

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :

"सच्चा राही"

पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

विषय एक नज़र में

- रहमतों की बारिश — सम्पादकीय 3
- कुर्आन की शिक्षा — मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
- प्यारे नबी की प्यारी बातें — मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी 6
- हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में — मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी 8
- एक महत्वपूर्ण सम्बोधन — मौ० मुहम्मद राबे हसनी 11
- सुल्तान सलाहुद्दीन अय्यूबी — डा० मु० इज्तिबा नदवी 13
- जिन्नात के रहने की जगहें — अबू मर्ग़ूब 15
- बुढ़ापे में स्वस्थ रहने का गुण — मुहम्मद यूनुस 16
- लैलतुल्क़द्र — इदारा 17
- सीरते सहाबा — मुहसिना फारूकी 18
- उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत ज़ैनब — सादिका तस्नीम फारूकी 23
- समाज सुधार — रमेश चन्द्र 23
- सिरदर्द से छुटकारा पाइये — अर्शद शहाब 24
- मौलाना इस्माइल शहीद का एक लेख — इम्तियाज अहमद नदवी 25
- जेल से एक पत्र — मुहम्मद आ़किल 26
- मोबाइल फोन का करिश्मा — मुहम्मद हसन अन्सारी 27
- ग़ज़ल — सय्यिद सईद 28
- आपके प्रश्नों के उत्तर — इदारा 29
- खुशियों का त्योहार — अबू मर्ग़ूब 30
- बच्चों में निमोनिया — डॉ० मु० असलम 31
- बग़दाद शहर की बुन्याद — डॉ० मुहम्मद रफी 32
- ह़म्दे बारी तआ़ला — मौ० मुह़म्मद सानी ह़सनी 33
- ईसा अ़लैहिस्सलाम की विलादत — आसिफ अंजार नदवी 34
- दारूल क़ज़ा या मैरेज ऐक्ट — मौ० अस्रारूल हक कासिमी 36
- आप का हुक्म है हालात पे एक नज़्म लिखू — डॉ० महबूब राही 37
- मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम और उनका सन्देश — मौ० स० सुलैमान नदवी 38
- अन्तर्राष्ट्रीय समाचार — ह़बीबुल्लाह आज़मी 40

रहमतों की बारिश

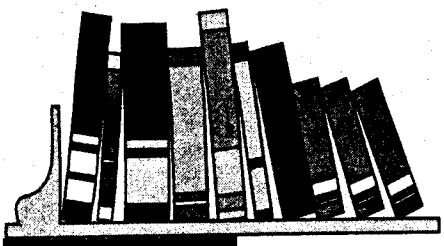

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

ऐ ईमान वालो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गये जैसे तुम से पहले के लोगों पर फ़र्ज़ किये गये थे ताकि तुम मुत्तक़ी (संयमी) बन जाओ। (२:१८३)

रमज़ान का महीना, जिसमें उतरा क़ुर्आन जो लोगों के लिए हिदायत है। इस में हिदायत (सत्यमार्ग) और भलाई और बुराई में फ़र्क़ करने वाले खुले हुये अहकाम हैं तो तुम में से जो इस महीने को पाये उस को चाहिए कि इसके रोज़े रखे और जो बीमार हो या सफ़र पर हो (और इन सबबों से रमज़ान के रोज़े न रख सके) तो वह दूसरे दिनों में (छुटे हुए रोज़ों की) गिन्ती पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी करना चाहता है और तुम्हारे साथ सख़्ती का मुआमला नहीं करना चाहता (यह दूसरे दिनों की आसानी इस लिए) ताकि तुम (अपने छूटे हुए रोज़ों की) गिन्ती पूरी कर लो और ताकि तुम हिदायत पा जाने पर अल्लाह की बड़ाई बयान करो और ताकि तुम शुक्र गुज़ारी करो। (२:१८५)

हां रमज़ान में रहमतों की बारिश होती है। हदीस के मुताबिक़ इस का पहला अशरा (दशम) रहमत है, दूसरा अशरा मग़्फ़िरत है और तीसरा अशरा दोज़ख से रिहाई का है। लेकिन याद रखना चाहिए कि जो रहमत न चाहे, मग़्फ़िरत न चाहे, (अल्लाह की पनाह) दोज़ख से न बचना चाहे तो उस को उल्टा अज़ाब है। खुदा न करे, एक शख़्स रोज़ा नहीं रखता, नमाज़ नहीं पढ़ता उसको रहमतों की बारिश से कुछ नहीं मिल सकता। यह बारिश पानी वाली बारिश नहीं है जो काफ़िर मुस्लिम सब पर बरस्ती है। यह रहमतों की बारिश है जो रहमतों के हक़दारों ही पर बरसती है। यूं तो अल्लाह की रहमत हमेशा रहती है लेकिन रमज़ान में इस का हुसूल (प्राप्ति) आसान है और बहुत बढ़ा चढ़ा कर है। नफ़्ल का सवाब फ़र्ज़ के बराबर और फ़र्ज़ का सवाब सत्तर गुना ज़ियादा।

पस चाहिए कि हम रमज़ान में नेकियां बढ़ा दें और शरअ़ी उ़ज़्र के बिना रोज़ा हरगिज़ न छोड़े। औरत बच्चे को दूध पिलाती है रोज़ा रखने से दूध कम हो जाता है और बच्चे को नुक़्सान पहुंचने का अन्देशा है तो यह शरअ़ी उ़ज़्र है। लेकिन अगर कोई ख़तरा नही है और दूध पिलाने वाली रोज़ा रखती है तो अच्छी बात है। इसी तरह कोई सफ़र पर है और रोज़ा रखने में उसको ज़हमत होती है पस अगर मुसाफ़िर रोज़ा न रखे तो यह उसका शरअ़ी उ़ज़्र है लेकिन अगर वह सफ़र में भी रोज़ा रखता है तो यह अ़ज़ीमत (श्रेष्ठता) की बात है। यह क़स्र नमाज़ की तरह नहीं है, हनफ़ी मस्लक में तो क़स्र नमाज़ पूरी पढ़ी जाए तो नमाज़ ही न होगी लेकिन अगर मुसाफ़िर रोज़ा रखे तो रोज़ा हो जाएगा बल्कि यह अफ़ज़ल समझा जाएगा। बीमारी भी शरअ़ी उ़ज़्र है लेकिन अगर कोई बीमार रोज़ा रख लेगा तो उस का रोज़ा हो जाएगा। जिस औरत को हम्ल (गर्भ) हो वह भी अगर रोज़ा न रखे तो यह उस का शरअ़ी उ़ज़्र है, लेकिन रोज़ा रखे गी तो रोज़ा हो जायेगा। हैज़ (रज) वाली औरत और निफ़ास (बच्चा पैदा होने के बाद हैज़ की तरह खून आने की हालत जिस का ज़माना ज़ियादा से ज़ियादा चालीस दिन, कम की कोई हद नहीं) इन दोनों हालतों में रोज़ा न रखना उ़ज़्रे शरअ़ी है और यह दूसरे उ़ज़्रों से मुख़्तलिफ़ है इन हालतों में कोई रोज़ा रखेगा तो रोज़ा होगा ही नहीं।

इन माज़ूरीन (विवश लोग) के लिए रमज़ान जब रहमत है जब इन्हों ने इस नीयत से रोज़ा छोड़ा हो कि बाद में क़ज़ा कर लेंगे। बाज़ लोग इस लिए भी रोज़ा छोड़ देते हैं कि उन को सख़्त मेहनत करना पड़ती है। पहली बात तो यह समझना चाहिए कि ख़ुद हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप के सहाबा ने रोज़ा रख कर जिहाद किया है पस हमको चाहिए कि मेहनत के उज़्र से रोज़ा न छोड़ें और अगर इस की हिम्मत नहीं है तो इस तरह का निज़ाम बनाएं कि रमज़ान में हल्का काम रखें लेकिन अगर सख़्त मेहनत से बचा न जा सके तो नीयत करें कि मौक़ा मिलते ही रोज़े पूरे कर लेंगे।

अगर आप ख़ुद रोज़ा रखते हैं लेकिन आप का बालिग़ बेटा बेटी या बीवी बिना उज़्र के रोज़ा नहीं रखते या आप का पड़ोसी बिना उज़्र के रोज़ा नहीं रखता लेकिन आप ख़ामोश हैं न उनको समझाते हैं न उनसे रोज़ा रखने का मुतालबा करते हैं तो यही नहीं कि वह रमज़ान की रहमतों और बरकतों से दूर होंगे, आप भी अपना हक़ अदा न करने के सबब रमज़ान की रहमतों से न सिर्फ़ महरूम होंगे बल्कि अल्लाह तआला के सामने जवाब देह भी होंगे।

अगर हम पर या आप पर ज़कात फ़र्ज़ है और ज़कात अदा नहीं की तो यह भी रहमतों के हासिल करने में रूकावट बनेगी। बेहतर होगा कि ज़कात की अदाएगी के लिए रमज़ान ही का महीना मुक़र्रर किया जाए। अगर किसी की हक़ तल्फ़ी की है या कर रहा है तो यह भी रहमत व मग़्फ़िरत के हुसूल में मानिअ़ (रोक) है। ग़रज़ कि खूब ध्यान दे लें पहले फ़राइज़ व वाजिबात (अनिवार्य कार्य) छूट न रहे हों और फिर नवाफ़िल की तरफ़ ध्यान दिया जाए। तरावीह की नमाज़ और उसमें ख़त्मे क़ुर्आन का इहतिमाम मुअक्किदा सुन्नतें हैं अगर हाफ़िज़ न मुहय्या हो सके तो अल्लाह तआला मुआफ़ करने वाले हैं लेकिन शरई उज़्र के बिना तरावीह छोड़ना बड़ी ही महरूमी की बात है। फिर रमज़ान में तरावीह के अलावा तिलावत में ख़त्मे क़ुर्आन का इहतिमाम चाहिए। क़ुर्आन न पढ़े हों तो किसी पढ़ने वाले से सुनने का वक़्त निकालना चाहिए। याद रखिये कैसिट के मुक़ाबले किसी पढ़ने वाले से सुनने में कहीं ज़ियादा सवाब है। अगर पूरा क़ुर्आन मजीद सुनने की तोफ़ीक़ न मिले तो जितना सुन सकें उसमें कोताही न करें। जो सूरतें ज़बानी याद की हैं जिन को नमाज़ में पढ़ते हैं उनको ही बार बार पढ़ें। उन को तो आप चलते फिरते और काम करते हुए ज़बानी बेवुज़ू भी पढ़ सकते हैं। दुरूद पढ़ने का क़ुर्आन शरीफ़ में भी हुक्म है और हदीस शरीफ़ में भी, पूरे रमज़ान एक अच्छी मिक़्दार (कम से कम २०० बार) दुरूद शरीफ़ वक़्त मुक़र्रर कर के रोज़ाना पढ़ें। मस्नून अज़कार, पहला कल्मा,दूसरा कल्मा, तीसरा कल्मा और चौथा कल्मा मौक़अ़ मिले तो एक–एक तस्बीह रोज़ाना पढ़ने का वक़्त निकालें। ज़बान की हिफ़ाज़त करें नाहक़ किसी को सख़्त बात न कहें। चुग़ली, ग़ीबत इल्ज़ाम, बुहतान और गन्दी बातों से ज़बान को बचाएं। ज़बान से अच्छी बातें करें लोगों को नेकी का हुक्म दें बुराई से रोकें। लोगों को क़ुर्आन व हदीस की बातें सुनाएं।

अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे तो रोज़ेदारों को इफ़तार करायें, रोज़ा रखने के लिए सहरी खिलायें भूखों को खाना दें, जिन के पास कपड़ा न हो उनको कपड़ा मुहैया करें। जहां पानी की तंगी हो पानी का इन्तिज़ाम करायें। दीनी मदरसों के बनाने और चलाने में मदद दें। कहीं मस्जिद बन रही हो उसमें मदद करें, बेवाओं, यतीमों, मिस्कीनों की मदद करें। गरज़ कि इबादतें और नेकियां तौफ़ीक़ के मुताबिक़ बढ़ा दें। गुनाहों से पूरी तरह हाथ खींच लें। पहले अ़श्रे में रहमत,दूसरे अ़श्रे में मग़्फ़िरत और तीसरे में जहन्नम से पनाह की दुआएं ज़ियादा करें। आख़िर अ़श्रे में तौफ़ीक मिले तो एअ़तिकाफ़ करें, रातों में जाग कर इबादत के साथ हज़ार महीनों से बेहतर लैलतुल्क़द्र की तलाश करें। बेशक रमज़ान रहमतों की बारिश का महीना है मगर यह बारिश मअ़नवी है जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त ही से हासिल हो सकती है। बड़ी मुश्किल यह है कि जो इन रहमातें से फाइदा न उठाएगा हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम ने उसको बद दुआ दी है और अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने आमीन कही है। अल्लाह अपनी पनाह में रखे और रमज़ान की बरकतें अ़ता फ़रमाए। आमीन।

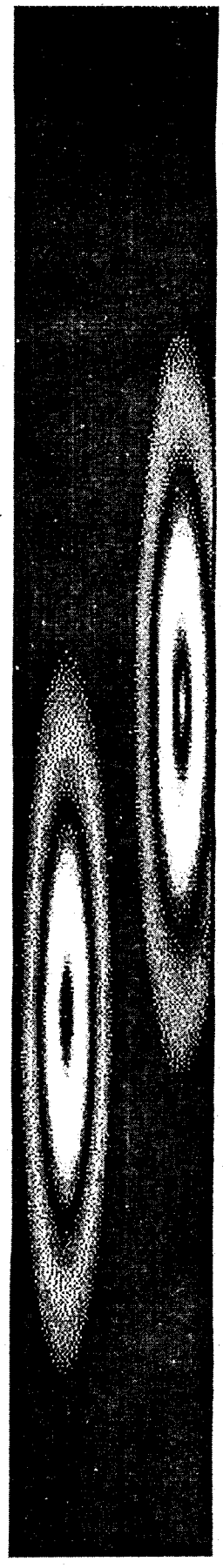

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

मशवरा

"व शाविर्हुम् फ़िल् अम्र" और उनसे काम में मशवरा लो। (आलि इम्रान १५८)

अल्लाह तआला ने इस आयत में रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को हुक्म दिया कि हुकूमत या दूसरे कामों में मुसलमानों से मशवरा कर लिया कीजिए।

जो हुक्म खास खुदा के यहां से आ चुके हैं उनमें तो मशवरे की जरूरत नहीं है। हां दूसरी बातों में मशवरा कर लेना बहुत ही जरूरी और अच्छी बात हैं।

जब यह आयत उतरी तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया खुदा व रसूल दोनों इस से बे नियाज़ हैं लेकिन खुदा ने मेरी उम्मत पर रहमत करते हुए यह हुक्म दिया है। तुम में से जो मशवरा करेगा वह सच्चाई को न खोएगा और जो मशवरा छोड़ देगा वह गलती को न खोएगा। यानी उससे गलती का जियादा डर है।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आम कामों में सहाबा से मशवरा लिया करते थे। ग़ज़व–ए–अहज़ाब में खन्दक खोदने में हज़रत सलमान फार्सी के मशवरे पर अमल किया। ग़ज़व–ए–बद्र में आप ने एक जगह पड़ाव डालना चाहा तो एक सहाबी ने कहा या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आपने यह जगह खुदा के हुक्म से चुनी है या अपनी राय से? आप ने फरमाया राए से। सहाबी ने अर्ज किया कि जंग के लिहाज से यह जगह कुछ अच्छी नहीं है फुलां जगह जियादा अच्छी है। आपने उन सहाबी की राए को पसन्द फरमाया और उस पर अमल फरमाया, कुर्आन ने मुसलमानों की तारीफ में फरमाया "और उनके काम आपस में मशवरे से होते हैं।" (अश्शूरा:३८)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक हदीस का मतलब यह है कि जिस से मशवरा लिया जाए उसको सहीह मशवरा देना चाहिए।

फरमाया ईमान के बाद सब से बड़ी अकलमन्दी लोगों के साथ महब्बत का बरताव है और खुद राए आदमी कार बरारी नहीं कर सकता और कोई आदमी मशवरे की बदौलत हलाक नही हुआ। अगर खुदा को किसी की हलाकत मंजूर होती है तो सबसे पहले खुदराए की खुदराई उस को बर्बाद करती है।

जानने वालों से पूछना

अगर तुम नहीं जानते हो तो जानने वालों से पूछो। (अन्नहल : ४३)

यह जरूरी नहीं है कि आदमी हर बात जानता हो जो बात न मालूम हो उसको जानने वालों से पूछ लेना चाहिए और इसमें शर्म न करना चाहिए। हजरत आइशा सिद्दीका फरमाती थीं कि अन्सारी औरतें बहुत अच्छी हैं कि उनको दीन के समझने में शर्म नहीं है।

इस आयत से यह भी मालूम हुआ कि आदमी को इल्म हासिल करने में कमी न करना चाहिए बल्कि जो ना मालूम हो उसके मालूम करने में कोशिश करना चाहिए।

हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि इल्म हासिल करना हर मुसलमान के लिए जरूरी है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार मस्जिद तशरीफ लाये देखा कि दो जमाअतें है एक में लोग दुआ वगैरा में मशगूल हैं और एक में लोग दीन के समझने समझाने में लगे हुए हैं फरमाया कि दोनों अच्छाई पर हैं हां इनमें से एक जमाअत दूसरी से अच्छी है। यह लोग जो अल्लाह से दुआ कर रहे हैं, खुदा चाहे तो इन को दे या न दे लेकिन यह लोग जो इल्म सीखते हैं और दूसरे को सिखाते हैं पस यह जियादा अच्छे हैं, यह फरमाया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन के पास बैठ गये।

पर्दे का हुक्म क़ुर्आन में

सहाब–ए–किराम मुख़ातब हैं: नबी की बीवियों से अगर तुम्हें कुछ मांगना हो तो पर्दे के पीछे से मांगा करो। यह तुम्हारे और उनके दिलों की पाकीज़गी (स्वक्षता) के लिए ज़ियादा मुनासिब (उचित) तरीक़ा है।

(सूरतुल अहज़ाब आयत ५३)

इस हुक्म के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों और तमाम मुसलमानों के दरवाज़ों पर पर्दे लटक गये और पर्दे पर अमल होने लगा।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

३६८. हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया क्या मैं तुम (लोगों) को ऐसे शख़्स के बारे में न बतलाऊं जो जहन्नम (की आग) पर हराम कर दिया जाएगा या जिस पर हजन्नम (की आग) हराम है। हर मानूस (प्रिय), तकलीफ न देने वाला, नर्म मिज़ाज (तिर्मिजी)।

सब्र और दर गुजर करने वाले पर अल्लाह का इनआम–

३६६. हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) से अल्लाह तआला के इर्शाद बदी को नेकी से टाल दिया जाये" (४१:३४) के बारे में नक़्ल किया गया है कि यहां मुराद इससे गुस्से के वक्त सब्र और बद सुलूकी के वक्त दरगुजर है। जब वह ऐसा करेंगे तो अल्लाह तआला उन्हें महफूज़ (और मामून) रखेगा और उनके सामने उनके दुश्मनों (और मुखालिफों) को झुका देगा। (बुखारी)

मुनाफ़िक़ की तीन निशानियां–

३७०. हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्ल०) ने फरमाया मुनाफिक की तीन निशानियां हैं : जब बात करता है तो झूठ बोलता है। जब वादा करता है तो वादा खिलाफी करता है और जब उसे अमीन बनाया जाता है तो ख़ियानत करता है। (बुखारी, मुस्लिम)

चार आदतें केवल मुनाफिक की है –

३७१. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया जिसमें चार आदतें हों वह पूरा मुनाफिक है और जिस में उनसे कोई एक आदत भी होगी तो वह भी मुनाफिक की आदत है, जब तक उसको छोड़ न दे, जब बात कहे तो झूठ कहे, वादा करे तो वादा खिलाफी करे, अमानत में ख़ियानत करे और जब लड़े तो गाली गलौज करे। (बुखारी, मुस्लिम)

अमानत का उठ जाना –

३७२. हजरत हुजैफा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हम से दो बातें इर्शाद फरमाई उनमें की एक मैंने देख ली दूसरी का इन्तिजार कर रहा हूं हम से आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया अमानत लोगों के दिलों की जड़ में उतरी, फिर कुर्आन उतरा उन्होंने कुर्आन व सुन्नत का इल्म हासिल किया फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हम से अमानत के उठ जाने के सम्बन्ध में फरमाया, कि आदमी एक नींद लेगा और अमानत उसके दिल से उठा ली जाएगी और उस का असर निशान की तरह बाकी रहेगा फिर एक नींद सोएगा और अमानत उसके दिल से उठा ली जाएगी और उसका असर छाप की तरह रह जाएगा जैसे तुम्हारे पैर पर चिन्गारी गिर जाए उससे छाला पड़ जाए तुम उसको उभरा हुआ देखोगे हालांकि उस में कुछ नहीं है फिर आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने एक कंकरी अपने पैर मुबारक पर लढ़का कर दिखाया। (बुखारी, मुस्लिम)

हजरत अबू बक्र (रज़ि०) ने हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के वादे को पूरा किया –

३७३. हजरत जाबिर (रज़ि०) से रिवायत है कि मुझ से हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया। अगर बहरैन का माल आ जाएगा तो मैं तुम को ऐसे → ऐसे दूंगा बहरैन का माल न आया यहां तक कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की वफात हो गयी फिर जब बहरैन का माल आया, तो हजरत अबू बक्र (रज़ि०) ने एलान कराया, जिस से हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का वादा हो, या आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर कर्ज हो, हमारे पास हाजिर हो, अतः मैं आया और मैं ने इस तरह अर्ज किया कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हम से इस तरह फरमाया था तो हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) ने लब भर अता किया मैं ने इसको शुमार किया, तो ५०० थे फिर आप ने मुझ से फरमाया इस का दो गुना ले लो। (बुखारी, मुस्लिम)

अस्ल दारोमदार नियत पर है–

३७४. हजरत जैद बिन अरकम (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)ने फरमाया अगर किसी ने अपने भाई से वादा किया और उसकी नियत वादा पूरा करने की है और पूरा न कर सका, और वक्त पर भी नहीं आया तो वह गुनहगार नही होगा।(अबू दाऊद, तिर्मिजी)

वादा वादा है चाहे मामूली चीज़ का क्यों न हो –

३७५. हजरत अब्दुल्लाह बिन आमिर (रज़ि०) से रिवायत है कि एक दिन

मेरी वालिदा ने मुझ को बुलाया, इस हाल में कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमारे घर तशरीफ रखते थे, तो मेरी वालिदा ने मुझ से कहा, इधर आओ मैं तुम को कुछ (चीज) दूंगी, हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने मेरी वालिदा से फरमायाः तुम इसको क्या देनी चाहती हो? मेरी वालिदा ने फरमाया, मैं इसको एक खजूर देना चाहती हूं। तो हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया : अगर तुम उसको कुछ न देती तो वह झूठ में शुमार होता। (अबू दाऊद)

अल्लाह और उसके रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के वादा तोड़ने का वबाल –

३७६. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) हमारी ओर मुतवज्जेह हुए और फरमायाः ऐ मुहाजिरीन की जमाअत। पांच चीजों में तुम जब मुब्तला हो (और मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं कि तुम उनसे दो चार हो तो उसका अन्जाम इस तरह होगा) जब भी किसी कौम में फुहशकारी फैल जाती है और एलानिया होने लगती है, तो उस कौम में ताऊन की वबा फैल जाती है और ऐसी तकलीफ देह बीमारियां हो जाती हैं, जो उनके अस्लाफ के जमाने में न थीं। और जब नाप तौल में कभी होगी तो कहत साली (सूखा), परेशान हाली और बादशाहे वक्त के जुल्म का निशाना बनते हैं। और जकात देना बन्द कर देते हैं, तो बारिशों का होना रूक जाता है, अगर जानवर न हों तो बारिश ही न हो।

और जब वह अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के वादे को तोड़ते है तो अल्लाह तआला दूसरी कौम के लोगों को दुश्मन बना कर उन पर मुसल्लत कर देते हैं तो वह उनके हाथों तक की चीज़ें ले लेते हैं।

जब तक इनके पेशवा अल्लाह की किताब से फैसला न करेंगे और अल्लाह तआला ने जो कुछ नाजिल किया है। उसमें मनमानी करेंगे तो अल्लाह तआला उनको आपसी लड़ाई झगड़े में डाल देगा। (इब्ने माजा)

सच्चाई नेकी की रहबर है –

३७७. हजरत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है वह नबी करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से रिवायत करते हैं कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया तुम पर सच्चाई लाजिम है और सच्चाई नेकी की ओर हिदायत करती है नेकी जन्नत की ओर ले जाती है आदमी बराबर सच बोलता रहता है और सच्चाई को ही इख्तियार कर लेता है तो वह मकामे सिद्दीकियत को पहुंच जाता है और अल्लाह तआला के यहां सिद्दीक लिख दिया जाता है और झूठ से बचना जरूरी है क्योंकि झूठ बोलने की आदत आदमी को बद्कारी की राह पर डाल देती है और बद्कारी उसको दोजख तक पहुंचा देती है और आदमी जब झूठ बोलने का आदी होता है और झूठ को इख्तियार कर लेता है तो अन्जाम यह होता है कि वह अल्लाह के यहां कज्जाब (झूठा) लिख दिया जाता है।

एक हदीस का अर्थ

इदारा

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि हम लोग रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से कुछ पूछने से रोक दिये गये थे इस लिए हम को इस बात का इन्तिजार रहता था कि दीहात से कोई आकिल (बुद्धिमान) आये और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से सुवाल करे और हम लोग सुनें। पस एक दिन एक आदमी दीहात से आया और उसने कहा कि ऐ मुहम्मद मेरे पास आप का आदमी आया और उसने कहा कि आप का कहना है कि अल्लाह ने आप को रसूल बना कर भेजा है। आप ने कहा उस ने सच कहा । उसने पूछा आस्मान किसने बनाया? आपने फरमाया अल्लाह ने, पूछा जमीन किसने बनाई ? फरमाया अल्लाह ने । पूछा यह पहाड़ किसने खड़े किये और इन में जो बना हुआ है वह किसने बनाया? फरमाया, अल्लाह ने। उसने कहा जिस ने आसमान जमीन और पहाड़ बनाए उसकी कसम क्या उसी ने आपको रसूल बनाया है? फरमाया हां। उसने कहा आपके आदमी ने बताया कि दिन रात में हम पर पांच वक्त की नमाजें हैं। फरमाया उसने सच कहा। उसने कहा, जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी कसम क्या उसीने आपको इस का हुक्म दिया है? फरमाया हां। उसने कहा आपके आदमी ने कहा कि हम पर हमारे मालों की जकात है। फरमाया सच कहा, उसने कहा, जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी कसम क्या उसी ने आपको इस का हुक्म दिया है? फरमाया : हां । उसने कहा आप के आदमी ने कहा हम पर साल में रमजान के रोजे हैं। फरमाया : उसने सच कहा। उसने कहा जिस अल्लाह ने आपको रसूल बनाया उसकी कसम क्या उसी नें आपको इसका हुक्म दिया है? फरमाया हां । उसने कहा कि आपके आदमी ने कहा कि हज्ज के रास्ते पर कुदरत (सामर्थ्य) हो तो हम पर हज्ज है। आपने फरमाया : सच कहा रावी कहते हैं कि फिर वह यह कहते हुए लौटा कि जिसने आप को रसूल बनाया उसकी कसम इन बातों पर न तो कुछ बढ़ाऊंगा न घटाऊंगा। हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि अगर इसने अपना अहद (वचन) सच कर दिखाया तो जन्नत में दाखिल होगा। (मुस्लिम)

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक नजर में

मौ० अबुलहसन अली हसनी

निकाह ख्वानी की रसम और उसका तरीका :

सामान्यतः निकाह की प्रक्रिया इस प्रकार क्रियान्वित होती है कि दूल्हा नया जोड़ा पहन कर (जो आमतौर पर लड़की वालों के यहां से आता है) महफिल में एक विशिष्ट एवं निर्धारित स्थान पर बैठता है। हिन्दुस्तान में बहुत जगह सेहरे और कंगने की भी रस्म है जिस को शरीअत के पाबन्द मुसलमान पसन्द नही करते। निकाह पढ़ने की रस्म कोई भी आलिम (धार्मिक विद्वान) या पढ़ा लिखा मुसलमान सम्पन्न करा सकता है। इसके लिए काजी की शर्त नहीं, जिनकी व्यवस्था मुसलमान शासकों के शासन काल में पूरे देश में थी और जिनका एक आवश्यक तथा रूचिकर पद सम्बन्धी कर्तव्य निकाह पढ़ाना भी था। ज्यादा उपयुक्त विधि (सुन्नत के अनुसार) यह है कि लड़की का बाप या कोई दूसरा निकाह पढ़ाए, इस लिए हजरत फातिमा (पैगम्बर साहब की पुत्री) का निकाह स्वयं रसूलुल्लाहु (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने हजरत अली के साथ पढ़ाया। इस समय दो गवाह और एक वकील लड़की के पास जाकर उसको सूचित करते हैं कि उसका निकाह अमुक व्यक्ति के साथ इतने महर पर किया जा रहा है। हिन्दुस्तान में इसका उत्तर साधरणतया मौन धारण करने से दिया जाता और इस मौनावस्था को स्वीकृति तथा सहमति का समानार्थ समझा जाता है। यह गवाह और वकील सामान्यतः खानदान के लोग और निकट सम्बन्धी होते हैं।

निकाह पढ़ाने वाला उसके बाद कुछ ऊंचे स्वर में कुरआन मजीद की आयतें, कुछ हदीसें और आशीर्वाद सम्बन्धी शब्द अरबी भाषा में कहता है, जिसको खुतबः–ए–निकाह कहते हैं इसके बाद ईजाब व कबूल कराता है (अर्थात लड़के से स्वीकृति ली जाती है) जिसके सामान्य रूप से ये शब्द होते हैं कि, "मैंने अमुक सज्जन की लड़की, जिसका नाम यह है, को उनकी ओर से इतने महर पर तुम्हारे निकाह में दिया, तुमने कुबूल किया? इस पर दूल्हा ऐसे स्वर में जो निकट बैठे लोगों द्वारा स्पष्ट रूप से सुन लिया जाय, कहता है कि, "मैंने कुबूल किया" फिर काजी और सभा में उपस्थित जन प्रार्थना हेतु हाथ उठाते हैं और खुदा से दुआ करते हैं कि लड़के तथा लड़की में पारस्परिक प्रेम हो, उनका गृहस्थ जीवन सफल तथा आनन्दमय ढंग से व्यतीत हो। यह खुत्बा (भाषण) साधारणतः अरबी भाषा में पढ़ा जाता है।

निकाह के अवसर पर संक्षिप्त भाषण और वैवाहिक स्वयत्व का वर्णन

अब कुछ समय से बहुत से आलिम (धार्मिक–विद्वान) खुत्बा अरबी में पढ़ने के बाद अर्थात् नियमबद्ध अरबी में भाषण देने के पश्चात उर्दू में संक्षिप्त व्याख्यान देने लगे हैं, जिसमें निकाह की यथार्थता, कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों पर प्रकाश डालते हैं और इसका प्रयास किया जाता हे कि यह रस्म मनोरंजन मात्र होकर न रह जाये बल्कि इसमें दूल्हा तथा उपस्थिति जनों को दीनी (धार्मिक) तथा नैतिक निर्देश मिलें और उनके अन्दर उत्तरदायित्व की भावना जागृत हो।

यहां इसी अवसर पर दिये जाने वाले व्याख्यानों में से एक भाषण का नमूना प्रस्तुत किया जा रहा है जो एक निकाह की महफिल में टेप रिकार्ड कर लिया गया था और इस सुधारात्मक प्रणाली का बड़ी हद तक प्रदर्शन करता है।

(खुत्बा–ए–मसनूना के बाद) "अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है–ऐ लोगो ! अपने रब का डर रक्खो जिसने तुम्हें एक ही जीव से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत से पुरूषों और स्त्रियों को फैला दिया। और उस अल्लाह का डर रखो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सहायता चाहते हो, और रिश्तों तथा नातों (को तोड़ने) से डरो। निस्सन्देह अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है। (कुरआन मजीद–अन निसा–१)

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह का डर रखो जैसा कि उससे डर रखने का हक है, और मरो तो इस दशामें कि तुम मुस्लिम हो।

(कुरआन मजीद– आले इमरान, १०२)

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो ! अल्लाह का डर रखो, और ठीक–ठीक बात कहो, वह तुम्हारे कामों को सुधार देगा और तुम्हारे गुनाहों को क्षमा कर देगा। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल का कहना माने उसने बड़ी सफलता प्राप्त की।

(कुरआन मजीद–अल–अहजाब, ७०,७१)

सज्जनों ! "निकाह" केवल रीतिरिवाज की पाबन्दी अथवा भोग

विलास की तृप्ति का साधन मात्र नहीं, निकाह की सुन्नत एक इबादत ही नहीं वरन, अनेक इबादतों का मिश्रण है। इससे एक धार्मिक आदेश नहीं, दर्जनों तथा बीसियों धार्मिक आदेश सम्बद्ध है। इसका गौरवमयी स्थान कुरआन मजीद में भी है और हदीस शरीफ में भी है और फिक्ह की किताबों में तो इस विषय से सम्बन्धित एक पूरा अध्याय है। परन्तु इस सुन्नत के प्रति जितनी असावधानी बरती जाती है उतनी किसी दूसरी सुन्नत तथा फर्ज के प्रति नहीं, बल्कि इसको खुदा की अवज्ञा, काम भाव का अभिमान, शैतान के आज्ञा पालन तथा रीति रिवाज के बन्धनों का क्षेत्र बना लिया गया है। इस सुन्नत में हमारे जीवन के प्रति सम्पूर्ण सन्देश विद्यमान हैं, इसका अनुमान आप कुरआन मजीद की उन आयतों से लगा सकते हैं जिनका पढ़ना निकाह के खुत्बे में रसूलुल्लाहि सल्लाहु अलैहि वसल्लम से सिद्ध है जो आरम्भ में पढ़ी गयी हैं। पहली आयत में मानव जाति की उत्पत्ति का उल्लेख किया गया है जो ऐसी शुभ घड़ी पर यथोचित और शकुनात्मक है, कि हजरत आदम अलैहिस्सलाम का एक अकेला आस्तित्व था और एक धर्म पत्नी, जिनसे अल्लाह तआला ने मानव जाति की अभिवृद्ध कर धरती को भर दिया। अल्लाह तआला ने इन दो प्राणियों में ऐसा प्रेम और उनके साहचर्य में ऐसी बरकत पैदा की कि आज संसार उसका साक्षी है, तो खुदा के लिए क्या मुश्किल है कि इन दो प्राणियों से जो आज मिल रहे हैं एक परिवार को आबाद तथा खानदान को शाद–व–बामुराद कर दे।

फिर फरमाता है, अपने परवरदिगार से शर्म करो जिसके नाम पर तुम एक दूसरे से सवाल करते हो।

सज्जनों! सम्पूर्ण जीवनचर्या निरन्तर तथा पूर्णरूपेण मांगने की प्रकिया है। व्यापार, शासन, राज्य एवं शिक्षा आदि सब एक प्रकार की मांगें हैं। इनमें एक वर्ग मांगने वाला तथा दूसरा देने वाला है। फिर हर भिखारी दाता तथा प्रत्येक दाता स्वयं भिखारी भी है। हम अपने समाज में गिरे से गिरे व्यक्ति से मांगने वाले हैं अतः प्रत्येक की आवश्यकतायें दूसरे से सम्बद्ध हैं, इससे कोई भी व्यक्ति बच नहीं सकता। सही भद्र एक सभ्य जीवन की विशेषता है। यह निकाह तथा शादी क्या है? यह भी एक प्रकारकी सभ्य एवं शुभ रूपी मांग है। एक सभ्य एवं शिष्ट परिवार ने एक दूसरे शरीफ खानदान से मांग की कि हमारे सुपुत्र को एक जीवन संगनी की आवश्यकता है, उसका जीवन नीरस तथा अपूर्ण है अतः उसकी परिपुष्टि कीजिए। दूसरे परिवार में इस मांग को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया। फिर आत्माएं जो कल एक दूसरे से अनभिज्ञ तथा अपरिचित थीं। और सबसे अधिक दूर थीं वे एक दूसरे से निकट तथा सम्बद्ध हो गई कि उनसे बढ़कर निकटता तथा सम्बद्धता का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। एक का भाग्य दूसरे से निकट तथा सम्बद्ध हो कि उनसे बढ़कर निकटता तथा सम्बद्धता का अनुमान भी नहीं लगाया जा सकता। एक का भाग्य दूसरे से संगठित और एक की प्रसन्नता एवं प्रफुल्लता दूसरे पर आधारित। यह सब उसके सर्वशक्तिमान के नाम पर चमत्कार है, जिसने अवैध को वैध, अवर्जित को वर्जित तथा अनविधान एवं पाप को भक्ति तथा उपासना का रूप प्रदान कर दिया और जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन बर्पा कर दिया। अल्लाह तआला फरमाता है कि अब इस नाम की लाज रखना। अति स्वार्थता की बात होगी कि तुम इस नाम को बीच में लाकर अपने स्वार्थ की पूर्ति कर लो और काम निकाल लो, फिर इस महिमा शाली नाम को एक दम भूल जाओ और जीवन में उसके द्वारा लागू किये उत्तरदायित्वों की पूर्ति न करो, भविष्य में भी इस नाम को याद तथाउसकी लाज रखना फिर फरमाया कि हां नाते रिश्तों का भी ध्यान रखना।

और उस अल्लाह का डर रखो जिसके वास्ते से तुम एक दूसरे से सहायता चाहते हो। और रिश्तों तथा नातों (को तोड़ने) से डरो।

आज एक नया रिश्ता हो रहा है, अतः आवश्यकता पड़ी कि पुराने रिश्तों का भी उल्लेख कर दिया जाय, कि इस नवीनतम रिश्ते से पुरानी नातेदारियों की परम्परायें तथा उनके प्रति उत्तदायित्व समाप्त नहीं हो जाते, ऐसा न हो कि स्त्री के रिश्ते को याद रक्खो और मां के रिश्ते को भूल जाओ, ससुर की सेवा आवश्यकता समझो और अपने बाप से मुंह मोड़ लो। यदि किसी के मन में ऐसा विचार उत्पन्न हो जाए कि इन बातों की कौन देख रेख करेगा और कौन हर समय साथ लगा रहेगा, तो फरमाया कि –

"निस्सन्देह अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है"

अल्लाह इस पर नियंत्रक है, यह वह गवाह है जो हर समय साथ रहेगा,

"हम उनकी शह रग से भी अधिक निकट है"

दूसरी आयत में एक कटु परन्तु अवश्यभावी वास्तविकता को याद दिलाया गया है, यह खुदा के पैगम्बर ही की शान है कि हर्ष एवं उल्लास से ओत प्रोत समारोह में ऐसे कटु यथार्थ

का उल्लेख करे, जिससे माव अपने परिणाम से अचेत न होने पाये, और उस माया की ओर ध्यान रखे जो साथ जाने वाली और सदैव साथ रहने वाली है, अर्थात् ईमान की पूंजी। फरमाया कि यह जिन्दगी कितनी ही प्रतिभावान, आनन्दमय एवं दीर्घ कालीन हो, इसकी चिन्ता रखना कि इसका अन्त अपने मालिक तथा पैदा करने वाले की आज्ञा पालन में और ईमान–व–यकीन पर हो। यही वह तथ्य है, जिसको संसार के एक सफलतापूर्ण व्यक्ति, जिसको अल्लाह तआला ने प्रधानता एवं उत्तमता, सम्पत्ति एवं अधिपत्य, मान मर्यादा, सौन्दर्य तथा सुन्दरता हर प्रकार के वैभव से सम्पन्न किया था, उच्चतम शिखर पर पहुंचने के बाद भी न भूलने पाया। हजरत यूसुफ अलैहिस्सलाम की वह दुआ याद कीजिए जो उन्होंने, अपने युग में चरम सीमा एवं प्रतिष्ठा प्राप्त करने की अवस्था में की। उनके शब्द थे :–

ऐ मेरे पालन हार तूने मुझे सत्ता प्रदान की, और मुझको बातों की तह तक पहुंचना सिखाया, धरती तथा आकाश के सृष्टा तू ही लौकिक एवं अलौकिक संसार में संरक्षक है। मेरा अन्त इस्लाम पर कर और मुझे सदाचारियों के साथ सम्बद्ध कर। (कुरआन मजीद–यूसुफ–१०१)

अब अन्त में इससे पूर्व कि वर के मुख से उन पवित्र शब्दों "मैंने कुबूल किया" का उच्चारण हो, जिसके सुनने के लिए समस्त उपस्थित व्यक्ति कान लगाये हैं, कुरआन मजीद सन्देश देता है कि ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सच्ची तथा पक्की बात जबान से निकालो। मानो वर को निर्देश दिया जा रहा है कि वह अपने मुख से निकलने वाले शब्दों के उत्तरदायित्व और उसके भावी परिणामों की अनुभूति कर इन शब्दों को मुख से निकाले कि, "मैंने कुबूल किया" तो इस बात का मनन करे कि उसने कितने गम्भीर एवं महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व के प्रति वचन दिया और इससे उसने कितने बड़े दायित्व का अंगीकरण किया है। फिर फरमाया कि यदि कोई ऐसे ही जांच तौल कर बात करने की प्रवृत्ति अपने अन्दर पैदा कर ले और उसके अन्दर दृढ़तापूर्वक अपने उत्तरदायित्व के प्रति अनुभूति की उत्पत्ति हो जाय तो उसका समस्त जीवन और उसके कथन एवं आचरण सत्यता एवं सत्यनिष्ठा के सांचे में ढल जायेंगे, और उसका जीवन एक आदर्श जीवन का रूप धारण कर लेगा और खुदा की मगफिरत (क्षमादान) तथा रजामंदी का पात्र हो जायेगा और फिर इस सन्देश को इस तथ्य पर समाप्त किया कि वास्तविक सफलता खुदा की बन्दगी और उसके रसूल के आज्ञापालन में निहित है, न अहं की दास्ता में न रीतिरिवाज के प्रतिबन्ध में।

निकाह सम्बन्धी व्याख्यान तथा लड़के–लड़की की पारस्परिक स्वीकृति के बाद छुवारे जो इसी अवसर के लिए लाये जाते हैं लुटाये अथवा बांट दिये जाते हैं, और यह विवाहोत्सव की परम्परागत पुराना तरीका है।"

महर अनिवार्य परन्तु उसकी अधिकता अवांछनीय

जहां तक महर का सम्बन्ध है, उसके बारे में भी हिन्दुस्तान के मुसलमानों ने अपना विशिष्ट दृष्टिकोण तथा एक अलग रीति निर्धारित कर ली है। और उसकी अधिकता को गौरव तथा सम्मान का कारण और निकाह (विवाह) की दृढ़ता एवं स्थायित्व की प्रतिभूति समझा जाता है। यहां बहुत से महर कल्पित तथा फर्जी करने की कोई संभावना ही नहीं। पूर्वकाल की अपेक्षा अब इसमें किसी हद तक यथार्थवादी विचारधारा को अपनाया जाने लगा है। शरीअत ने इस बारे में कोई विशिष्ट धनराशि का निर्धारण नहीं किया है, बल्कि इसको पति की हैसियत, सामाजिक तथा धार्मिक औचित्य पर छोड़ रखा है। हां, महर की कमी और उसके प्रति सन्तुलित दृष्टिकोण को पसन्द किया गया है। परन्तु इस बात को अवश्य निश्चित कर दिया है कि महर को पूर्णतया अदा करने का संकल्प हो, नही तो वह विवाह वैधानिक विवाह नहीं अपित् एक अवैधानिक सम्बन्ध तथा दुष्कार्य समझा जायेगा, और प्रत्यक्ष है कि यह उसी समय हो सकता है जब महर की धनराशि पति की अवस्थानुसार और उसके लिए अदा करने की सम्भावना हो।

Anees Ahmad 0522-2242385(S) 2241117(R)

Famous Foot Wear

Wholeseller and Reteiler, Shoes, Chappal Sandle, Sleeper, Bally etc.

301/11, Saray Bans Akbari Gate, Luknow

तुमकुर (बंगलौर) के समाज सुधार जलसे में

नाज़िम नदवतुल उलमा मौलाना मुहम्मद राबे हसनी नदवी का एक महत्वपूर्ण संबोधन

उम्मते मुस्लिमा की दो बड़ी विशेषताएं (दअवत इलल्हक और शहादत अलन्नास)

अर्थातः सच्चाई की ओर बुलाना और लोगों के सामने गवाही देना।

बुज़ुर्गों और दोस्तो ! अल्लाह तबारक व तआला ने उम्मते मुस्लिमा को ख़ैर उम्मत (उत्तम समुदाय) नियुक्त किया है और कुरआन मजीद में इस उम्मत की विशेषताएं और उसकी ज़िम्मेदारी बताते हुए अल्लाह तआला ने इरशाद फरमाया – अनुवाद, और हमने तुमको ऐसी ही जमाअत बनादी है जो (हर पहलू से) ऐतिदाल (समता) पर है ताकि तुम (मुखालिफ़) लोगों के मुक़ाबिले में गवाह हो, और तुम्हारे लिए रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) गवाह हों,– इस उम्मत को अल्लाह तआला ने उम्मते वस्त (मध्य समुदाय) नियुक्त किया है, और वस्त का अर्थ, बीच में होना, उत्तम और आदर्शी होना अल्लाह तबारक व तआला ने इस उम्मत को सारी उम्मतों से उत्तम बनाया है, और इसको मुमताज (उत्तम) बनाने के साथ साथ इस पर दूसरी सारी कौमों और सारी उम्मतों की देख भाल के लिए ज़िम्मेदारी भी रखी है, फ़रमाया कि सारे इन्सानों के तुम गवाह बनो, उनके शाहिद (साक्षी) बनो, उनके नज़र में रखने वाले और उनकी गवाही देने के काबिल अपने को बनाओ, अल्लाह तबारक व तआला क़ियामत में वह शहादत (गवाही) इस उम्मत से हासिल करेगा लेकिन शहादत में यह है कि किसी काम में अगर किसी को निगरां (निरीक्षक) बनाया जाय और उसको देख भाल सुपुर्द की जाए, तो उसका मेयार (कसौटी) भी वह होना चाहिए जो उसके उहदे (पद) मुकाम (स्थान) के मुताबिक हो, पहले यह उम्मत खुद आदर्श उम्मत बने, अखलाक (सद्व्यवहार) के एतिबार से, आमाल के ऐतिबार से, सिफात (विशेषताओं) के एतिबार से, आदर्श उम्मत बने तब वह दूसरों के मेयार (कसौटी) का अन्दाजा कर सकती है, दूसरों के मेयार को देख सकती है और उसकी निगरां (संरक्षक) बन सकती है।

दूसरे इस उम्मत की जिम्मेदारी यह रखी गई है कि वह लोगों को हक की तरफ बुलाए, और हक़ लोगों तक पहुंचाए, अल्लाह तआला ने फरमाया : तुम लोग अच्छी जमाअत हो कि वह जमाअत लोगों के लिए ज़ाहिर की गई तुम लोग नेक कामों को बतलाते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह तआला पर ईमान लाते हो (आले–इमरान–११०) इस उम्मत को बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी दी गई है लेकिन इसके साथ–साथ यह भी ज़रूरी है कि इस जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए जो अखलाक चाहिए, जो सिफात चाहिएं जो मेयार चाहिए उस मेयार को भी बरक़रार रखना होगा, उम्मत अपना मेयार बरक़रार नहीं रखेगी तो इस ज़िम्मेदारी का हक नहीं अदा कर सकेगी, और उससे कियामत (महाप्रलय) के दिन सवाल होगा कि जो ज़िम्मेदारी तुम पर डाली गई थी तुमने अपने को इस ज़िम्मेदारी के लायक़ नहीं बनाया और ज़िम्मेदारी को तुमने पूरा भी नहीं किया।

इन्सान की ज़िन्दगी दो तरह की होती है एक उसकी इन्फ़िरादी (व्यक्तिगत) जिन्दगी और दूसरी उसकी इज्तिमाई (सामूहिक) और समाजी जिन्दगी होती है। बहुत सी बातें इन्सान के व्यक्तिगत जीवन से संबंधित होती है कि वह कैसा ईमान रखता है? कैसा एतिमाद (भरोसा) अल्लाह पर रखता है? उसका अपने दीन से इबादात के लिहाज से क्या तअल्लुक (संबंध) है? उसके मुताअल्लिक़ (विषय में) उससे पूछा जाएगा कि तुमने उन चीजों में अपनी जिन्दगी का क्या मेयार (स्तर) रखा था? और उसे उन चीजों के मुताबिक ढाला था या नहीं ?

इन्सान की जिन्दगी का दूसरा पहलू इज्तिमाई (सामूहिक) और समाजी होता है कि आपस में एक दूसरे के साथ तुम किस तरह मआमला (व्यवहार) करते थे? अल्लाह तआला ने इन्सान को इज्तिमाई मखलूक (सामूहिक प्राणी वर्ग) बनाया है वह इस माआमिले (संबंध) में दूसरे प्रणी वर्ग से मुम्ताज (श्रेष्ठ) है, दूसरी मख़लूक़ात (प्राणीवर्ग) को आपस में इज्तिमाई ज़िन्दगी गुज़ारेने की जरूरत नहीं पड़ती है, हर जानवर अपने ढंग की ज़िन्दगी गुज़ारता है उसको दूसरे जानवर की ज़रूरत नहीं

पड़ती, गाय को दूसरी गाय की मदद की जरूरत नहीं, बकरी को दूसरी बकरी की मदद की ज़रूरत नहीं है हर बकरी अपना काम खुद करेगी खाना पीना रहना सहना कुछ भी हो, दूसरी बकरी की मुहताज नही है, लेकिन जहां तक इन्सान का तअल्लुक़ है तो हर इन्सान दूसरे इन्सान का मुहताज है, उसके सहयोग और सहायता की बिना उसकी ज़िन्दगी चल नहीं सकती, हम अगर अपने जीवन की समीक्षा करें तो हमारी हर चीज़ में दूसरे की सहायता और दूसरे की शिरकत (भागीदारी) पाई जाती है, इन्सान को अल्लाह तआला ने समाजी जीवन प्रदान किया है। यह चीजें दूसरे प्रणीगण को प्राप्त नही है समाजी जीवन के कुछ अधिकार हैं, उसके कर्तव्य हैं और अख़लाक़ (सद्व्यवहार) हैं, इन अख़लाक़ और हुकूक (अधिकार) को क़ाएम (स्थापित) रखना पड़ेगा, हम ख़ैर उम्मत (उत्तम समुदाय) नहीं बन सकते, एक अच्छी उम्मत नही बन सकते जब तक कि हमारे आपस के मआमिलात (व्यवहार) अच्छे न हों, और एक दूसरे के हुकूक अदा न करें।

इस्लाहे मआशिरा (समाज सुधार) का मतलब यही है कि जो हमारा मआशिरा (समाज) है, जो हमारी समाजी जिन्दगी है, उसमें अल्लाह और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमको अहकाम (आदेश) दिये हैं और उसकी जो तालीमात (शिक्षा) हमको कुरआन हदीस से हासिल हुई है, उनके मुताबिक हम अपनी सामाजिक ज़िन्दगी को मुरत्तब (व्यवस्थित) करें, निकाह तलाक के मसाएल हैं और इसी तरह दूसरे रिश्तेदारों के हुकूक हैं और फिर बीवी के हुकूक हैं विरासत के मआमिलात हैं, इस संबंध में इस्लामी शिक्षाएं स्पष्ट हैं लेकिन हो यह रहा है कि मुसलमान मनमानी जिन्दगी गुजार रहा है और दूसरों की नकल में बहुत सी चीजें हमने गलत सीख ली हैं उनके रीति रिवाज को अपना लिया और अब उसके नतीजे में दो नुकसान हो रहे हैं, एक नुकसान यह है कि अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हुक्मों (आदेशों) की खिलाफ वर्जी हो रही है और दूसरा नुकसान यह कि दूसरों के साथ जुल्म (अत्याचार) हो रहा है और उनके अधिकार मारे जा रहे हैं यह सब इसलिए है कि हम अपने नफ़्स (इच्छा) और खुवाहिशात (कामना) पर हावी (बाधक) नहीं हो पाते, अपनी खुवाहिशात (अभिलाषाओं) को दबा नहीं पाते, हमारी जो खवाहिश (कामनाएं) होती है उस खुवाहिश में अगर किसी का हक मारा जाता है तो उसकी हम बिल्कुल परवाह नहीं करते, नफ़्स को दबाना और उसे मारना यह बड़ी हिकमत (बुद्धमानी) और आला तदबीर (उच्च उपाय) है, अगर हम अपने नफ़्स को दबाएं और उस पर कन्ट्रोल कर लें और उस पर काबू (वश) पालें तो हम समझते हैं कि बहुत सी बुराइयां और बहुत से नक़ाएस (कमियां) जो हमारे समाज में पैदा हो गए हैं वह खुद दूर हो जाएंगे और यह बात कैसे हो सकती हे? यह बात अल्लाह और उसके रसूल स०अ० के हुक्मों (आदेशों) का लिहाज़ करने से और आखिरत का तसव्वुर (अनुध्यान) करने से हासिल हो सकती है। (जारी)

हिन्दी रूपान्तर — गुफ़रान नदवी

(पृष्ठ १४ का शेष)

जमीन है जहां ईसा मसीह अलैहिस्सलाम पैदा हुए। हमने जहरत मसीह अलैहिस्सलाम को खोया नहीं बल्कि उनके साथ साथ दयालुता के प्रतीक नबी मुहम्मद सल्ल० को भी पालिया है। कुछ घन्टों के बाद इस्लामी सेना जिहाद के लिए जा रही थी, तो नवमुस्लिम लुईस इस्लामी झंडा हाथ में लिए आगे आगे चल रहा था और उसकी जुबान पर अल्लाहु अकबर, लाइलाहा इल्लल्लाहु का मधुर और पवित्र तराना था।

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees & Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी का आदर्श चरित्र

डा० मु० इज्तिबा नदवी

जब यूरोप की ईसाई दुनिया वाले अपने विचार के अनुसार हजरत मसीह अलैहिस्सलाम की कब्र की सुरक्षा का बहाना बनाकर इस्लामी जगत पर हमले कर रहे थे और फिलिस्तीन के अधिकांश भाग पर कब्जा कर के मुसलमानों पर अत्याचार ढा रहे थे और उनको तबाह व बर्बाद कर रहे थे तो अल्लाह की मदद से सुलतान नूरूद्दीन जंगी और उनके बाद उनके उत्तराधिकारी मर्दे मोमिन व मुजाहिद सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने जिहाद का झंडा बुलन्द किया और अत्याचारियों के विरुद्ध सफलताएं प्राप्त कीं। सुलतान सलाहुद्दीन अय्यूबी ने सलीबी क़ब्ज़े के नव्वे साल के बाद बैतुल मक्दिस को दोबारा वापस लिया।

इतिहास में इन जंगों को सलीबी जंगों के नाम से याद किया गया है, क्योंकि ईसाई पादरियों ने सलीब उठाकर यूरोप के शहर शहर और गांव गांव जाकर ईसाइयों को इस पवित्र जंग के नाम पर तैयार किया था। पादरियों की आवाज पर सारी ईसाई दुनिया में नफरत और जंग का जुनून पैदा हो गया। क्या औरत और क्या मर्द बच्चे तक इस जंग में शरीक होने के लिए घरों से निकल खड़े हुए। फ्रांस के एक दूर के गांव का एक छोटो सा घराना भी, कब्रे मसीह के लिए अपनी धार्मिक भावनाओं के प्रभाव में आकर जंग के लिए निकल खड़ा हुआ। यह घराना एक पुरुष लुईस, उसकी पत्नी हैलाना और दूध पीते बच्चे पर आधारित था। दोनों मियां बीवी जवान थे। दोनों ने एक दूसरे से टूट कर मोहब्बत की थी। उनके लिए एक दूसरे से अलग होना बड़ा भारी व असहनीय काम था।

वे उस समय युद्ध के मैदान में पहुंचे जब फलस्तीन के तटीय शहर अका में सलीबी सेनाएं किला बंद थीं और समुन्द्र की ओर से उनको बराबर सैनिक सहायता पहुंच रही थी। लेनिक सेना की खुशकी की ओर से घेराव कर रखा था और शहर फतह नहीं हो रहा था, जिसके कारण सुलतान अय्यूबी चिन्तित थे। इस का एक करण यह भी था कि सलीबी अपनी शक्ति को संगठित कर रहे थे। सुलतान ने स्वयं देखा कि घेराव के पहले ही दिन सात किश्तियां सलीबी सेना को लेकर लंगर डालने लगी थी। सुलतान के सलाहकार काजी इब्न शद्दाद कहते हैं कि मैंने सुलतान को देखा कि वे दुआ में गिड़गिड़ाकर और रो, रो कर अल्लाह से दुआ कर रहे हैं। मैंने कहा सुलतान अल्लाह आपकी दुआ अवश्य स्वीकार करेगा और आप विजयी होंगे।

अतएव अल्लाह ने विजय व सफलता के दरवाजे खोल दिए और सलीबियों को पराज्य का सामना करना पड़ा। हैलाना का पति लुईस कई दिन से खेमे में वापस नहीं आया था। अतः हैलान ने अपने पति के गम में रोना बिलबिलाना शुरू कर दिया। उसके पास पड़ोस के खेमे की औरतों ने विश्वास दिलाया कि लुइस सलीब की छाया में,उसकी सुरक्षा करते करते जंग में शहीद हो गया होगा। उन्होंने उसे ढारस दी कि यह उसका बड़ा सौभाग्य है। फिर उसका पुत्र छोटा लुईस जिन्दा है, अब उसकी शिक्षा व प्रशिक्षण की ओर ध्यान दे और अपने पति की याद को जिन्दा रखे। मगर हैलाना सख्त परेशान, बेचैनी और पीड़ा का शिकार थी। किसी की सांतवना से उसे कोई राहत नहीं मिल रही थी। उसकी नजर के सामने गांव का शान्त जीवन और लुईस के साथ प्यार महब्बत और सुखद वातावरण में गुजारे हुए लम्हे एक एक आने और उसे बेचैन करने लगे। उसके आंसू बहते रहे। रात बड़ी बेचैनी से गुजरी, लेकिन रात के अन्तिम भाग में उसको नींद आ गयी। उसका बच्चा उसकी गोद में मीठी नींद सो राह था, दिन चढ़े जब उसकी आंख खुली तो उसका बच्चा गायब था। वह एक चीख मारकर एक पागल की तरह खेमे से बाहर निकली और आस पास के खेमे टटोल डाले मगर बच्चा कही न मिला।

अब उसके दुख व पीड़ा का लावा फट पड़ा । वह रोती पीटती सलीबी सेना के कमानडरों के खेमे में पहुंची और अपने बच्चे के गुम होने की सूचना दी। उन लोगों ने उसे टका सा जवाब दे दिया, किसी ने कोई मदद नही की। किसी ने सलाह दी कि वह मुसलमानों के बादशाह के पास जाए और उससे विनती करे। वह बादशाह बड़ा दयावान और अच्छे स्वभाव का है, वह अवश्य तुम्हारी मदद करेगा।

हैलाना रोती पीटती और फरियाद करती हुई मुसलमानों के लश्कर की ओर चल पड़ी। निकट पहुंची तो रोक दी गयी।

पूछा गया कि क्यों रो रही है और कैसे आयी हैं ? अपने पति के सम्भावित मौत और बच्चे के लापता होने के बारे में बताया और कहा कि मैं सुलतान से मिलना चाहती हूं। हाय मेरा बच्चा ! हाय मेरा पति ! एक मुसलमान सैनिक ने उसकी परेशानी और पीड़ा को देखकर सुलतान के खेमे की ओर भेज दिया। उसके रोने और बिलबिलाने की आवाज सुनकर काजी इब्ने शद्दाद बाहर निकले और उससे उसकी बिपता सुनी। काजी इब्ने शद्दाद ने कहा कि सुल्तान इस समय बहुत व्यस्त हैं, तुम थोड़ी देर इन्तजार कर लो। उसने कहा नहीं मुझे डर है कि मेरा बच्चा कहीं किसी मुसीबत में न फंस जाए। मुझे सुलतान से मुलाकात करने दो। काजी साहब ने इशारा किया और कहा उस व्यक्ति के साथ चली जाओ। उसने समझा कि सुलतान के पास ले जायी जा रही है इसलिए ख़ामोश हो गयी। मगर जब उसने अपने को कैदियों के खेमे में पाया तो रोने और चिल्लाने लगी। हाय मेरा बच्चा। खेमे के आखिरी सिरे पर एक कैदी सर झुकाए बैठा था। उसने चीख, पुकार की आवाज सुनी तो उधर देखा, आवाज जानी पहचानी लगी। उसने ध्यान से देखा उस पर उसकी नजर ठहर गयी।

थोड़ी देर के बाद सुलतान ने उस औरत को बुलाया और वह चली गयी। उसके जाते ही उस कैदी ने चीखना शुरू किया। मैं उसको देखना चाहता हूं, मैं उससे मिलना चाहता हूं। खेमे के सारे कैदी और पहरेदार और आस पास के खेमे वाले हैरान थे कि अब तक उस कैदी ने ऊंची आवाज से बात न की थी, बड़ी गंभीरता और धैर्य का व्यवहार कर रहा था। अचानक उसे क्या हो गया। लोगों ने बहुत पूछा मगर चीख के सिवा और कोई जवाब न था। सुलतान सलाहुद्दीन को उसके बारे में बताया गया। सुलतान ने उसे भी बुला भेजा।

सुलतान के खेमे में पहुंचते ही उसका चीखना चिल्लाना बन्द हो गया। सुलतान के आदर सम्मान, उसके उच्च आचरण और उसकी कृपा व दया से वह बड़ा प्रभावित था। वह अपनी इस कैद की अवधि में बादशाह और उसके लश्कर के सद्–व्यवहार को देखकर बड़ा उत्साहित था। उसने खेमे में नजर दौड़ायी तो वह औरत प्रसन्न और सन्तुष्ट नजर आयी। उसकी गोद में बच्चा खेल रहा था । वह सुलतान का आभार और कृतज्ञता की नजरों से देख रही थी। अचानक उठी और सुलतान के कदमों में गिर कर रोने लगी। सुलतान का दिल बेचैन हो गया और उसने उसे ढारस बंधायी और सर उठाने के लिए कहा। वह कैदी यह दृश्य देख कर तुरन्त उस औरत की ओर लपका। बच्चे ने देखा तो वह चीख पड़ा, अब्बा जान ! और उसकी गोद में आ गया। हैलाना ने हैरत और डरते सहमते देखा। उसकी आंखों को विश्वास न आ रहा था फिर कहा लुईस! क्या तुम जिन्दा हो? यह कह कर पति से लिपट गई। सुलतान ने अपनी नजरें दुसरी ओर फेर लीं। इन दोनों को मुलाकात का अवसर दिया। सुलतान ने फिर दोनों को अपने सामने बैठा दिखा। उनके शब्द उनका साथ नहीं दे रहे थे। सुलतान ने कहा हमने वही किया जो हमारे दीन ने हमें हुक्म दिया है। हैलाना ने कहा क्या आप का दीन इस बात का हुक्म देता है? बेशक इस्लाम सारे जहां और समस्त लोगों के लिए रहमत है। हैलाना ने कहा एक दूसरे धर्म की कमजोर औरत इस रहमत व दयालुता से किस प्रकार लाभ उठा सकती है? क्या वह इस्लाम के घनी और ठंडी छाया तले जीवन बसर नहीं कर सकती ?

सुलतान का चेहरा खुशी से दमक उठा और बोले खुदा की दयालुता तो सभी के लिए है, उससे हर कोई लाभ उठा सकता है।

हैलाना ने प्रश्न किया फिर मैं कैसे मुसलमान हो सकती हूं ?

सुलतान ने जवाब दिया : गवाही दो कि अल्लाह एक है और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उसके सन्देश्टा हैं। उसने कलिमा–ए–शहादत पढ़ लिया और पलट कर देख तो उसका पति लुईस भी कलिमा लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ रहा था।

दोनों बच्चे को लिए हुए शान्त व प्रसन्न सुलतान के खेमे से निकले। लुईस ने कहा कि हमारे धर का बाग बनफशा के फूल, फलदार पेड़ और उनकी घनी छाया अब कैसी होगी, जहां हमारा प्यार फला फूला था। क्या हम फिर उस प्रिय गांव में वापस नहीं जाएंगे। यदि मोहब्बत का पौध वहां पला बढ़ा था, तो मुरझा और कुम्हला जाने के बाद यहां दोबारा हरा भरा हुआ है। हमने खुदा को यहां पा लिया है, उसे पहचाना है, सज्जनता, मानवता और उच्च चरित्र से हम यहां परिचित हुए हैं तो अब हम यहीं रहेंगे। यही वह

(शेष पृ. १२ पर)

जिन्नात के रहने की जगहें

अबू मर्गूब

हम इन्सानों को अपने जान व माल की हिफ़ाज़त के लिए और अपने जिस्मों को बारिश, लू, धूप और सर्द हवाओं वग़ैरा से बचाने के लिए मज़बूत मकानों की ज़रूरत होती है। अपनी शर्मगाहें (लज्जा अंगों) को छुपाने और जिस्म को मौसिम की सख़्तियों से बचाने नीज़ ज़ीनत (श्रृंगार) के लिये लिबास (वस्त्र) की ज़रूरत होती है। लेकिन हम को यह नहीं बताया गया है कि नारी मख़लूक़ (आग से बनी प्राणी) जिन्नों को भी अपनी हिफ़ाज़त के लिए मकान की ज़रूरत होती है या नहीं। न यह बताया गया है कि उनको बारिश, लू और बर्फ़ बारी (हिमपात) से तकलीफ़ पहुंचती है या नहीं। न कहीं ईंट पत्थर के उनके मकानात देखे गये। इसी तरह यह भी नहीं बताया गया कि इस नारी मख़लूक़ (अग्न–प्राणी) में कोई चीज़ आपस में एक दूसरे से छुपाने की है या नही जिसे एक जिन्न दूसरे से छुपाता हो यानी उन के यहां सत्रे औरत है या नही और अगर है तो कैसे? उनकी ज़ीनत के लिए कोई ग़ैर मरई (हम लोगों को न दिखने वाला) लिबास है या नहीं? इन सब बातों की जानकारी से हम इन्सान अलग रखे गये हैं। उन के खानों का ज़िक्र तो आया और ऐसा लगा कि वह माद्दी (भौतिक) खाने से उसका सत या उसकी बरकत खाते हैं लेकिन जिन्नों के पाख़ाने, पेशाब का ज़िक्र कहीं नहीं आया। इस सिलसिले में हम इन्सान जो बात भी कहेंगे वह किसी क़रीने की बुन्याद पर (अनुमान के आधार पर) ही कहेंगे जिसका यक़ीनी (विश्वसनीय) होना ज़रूरी नहीं है।

इब्लीस अपना तख़्त पानी पर बिछाता है।

सहीह मुस्लिम में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इब्लीस अपना तख़्त पानी पर बिछाता है (यानी समुन्दर में) और फिर वहां से हर जानिब इन्सानों को गुमराही (पथभ्रष्टता) की तरफ़ बुलाने के लिए अपने शैतानी दस्ते भेजता है उसका सब से प्रिय शैतान वह होता है जो उसके नज़दीक सब से ज़ियादा फ़ित्ने वाला काम कर के आता है। उन शैतानी कारिन्दों में से कोई आता है और कहता है कि मैं फ़ुलां के साथ बराबर रहा और इस हाल में छोड़ा जब कि वह ऐसा ऐसा कह रहा था (मतलब है एसी बातें कह रहा था जिससे वह गुनाहगार हो) तो इब्लीस कहता है कि ख़ुदा की क़सम तू ने कुछ न किया, फिर उनमें से कोई दूसरा आता है और कहता है कि मैं फ़ुलां के साथ बराबर रहा और उस वक़्त तक उसे न छोड़ा जब तक मियां बीवी में जुदाई न करा दी। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि फिर इब्लीस उस शैतान को अपने क़रीब करता है, और क़रीब करता है कहता है कि तू बहुत अच्छा है। (सहीह मुस्लिम किताबुल मुनाफ़िक़ीन)

इस रिवायत से जहां यह मालूम हुआ कि इब्लीस इन्सानों को गुमराह करने के लिए मुनज्जम (व्यवस्थित) कोशिश करता है और बाक़ाअ़िदा (नियमित रूप से) शैतानी दस्ते रवाना करता है फिर उसकी कार गुज़ारियां सुनकर सब से ज़ियादा फ़ित्ना (उपद्रव) पैदा करने वाले शैतान को शाबाशी देता है वहीं यह भी मालूम हुआ कि उसका तख़्त पानी पर बिछता है और उसकी शैतानी फ़ौजें उसके साथ होती हैं यानी वह भी समुन्दर पर होती हैं। पस इस से यह नतीजा (परिणाम) निकला कि जिन्न पानी पर रह सकते हैं। तो फिर बारिश भी उनको नुक़सान नहीं पहुंचा सकती और अगर समुन्दर पर बिछने वाला तख़्त, इब्लीस के नारी जिस्म के लिहाज़ से किसी न दिखने वाले माद्दे से बना है और दूसरे शैतानों के लिए इसी तरह का कोई इन्तिज़ाम हो तो इस पर क़ियास (अनुमान) किया जा सकता है कि अगर उनको मकान की ज़रूरत है तो मकानात भी ऐसी चीजों से बनते होंगे जो न दिखाई दें न जगह घेरें। फिर जब वह इन्सान के ख़ून के साथ दौड़ सकते हैं और इन्सान के अन्दर दाख़िल हो सकते हैं जैसा कि हदीसों में आया है तो वह कहीं भी रह सकते हैं। उनको अपने मकानात के लिए न मख़्सूस जगह चाहिए न ही उनको इन्सानी मकानों के मैट्रीयल की ज़रूरत है।

जिन्नात को हम ने अपने तजरिबे से नहीं किताब व सुन्नत की तालीम से जाना और माना है।

बुढ़ापे में स्वस्थ रहने का गुण

मियां मुहम्मद यूनुस

बुढ़ापा जिन्दगी की एक ऐसी सच्चाई है जिसे झुठलाया नहीं जा सकता। इस सच्चाई से तो वैसे हर व्यक्ति अवगत है मगर वह लोग कुछ अधिक ही जानते हैं जिन्हें अल्लाह तआला लम्बी उम्र देता है। बुढ़ापे में मनुष्य अनगिनत नेअमतों और लज्ज़त से वंचित हो जाता है। स्वास्थ और तवानाई से अक्सर बूढ़े लोग महरूम हो जाते हैं। उम्र के बुढ़ने के साथ शरीर में परिवर्तन होने लगता है। चेहरे पर झुर्रियां पड़ जाती हैं। पट्ठे ढीले पड़ जाते हैं और शरीर हड्डियां का ढांचा और लोथड़ा बन जाता है।

डॉ० फोर्ड, जो इंसानी उम्र के साइंस के एक जाने माने वैज्ञानिक हैं, कहते हैं कि जीवन अवधि कम होन के कारण हम बहुत जल्द बुढ़ापे में जिन्दगी की रोचक बहारों से कट कर रह जाते हैं। अपने चाहने वालों और प्यार करने वालों से अलग कर दिये जाते हैं और जिन्दगी के शुरूआती दौर में ही एक बेकार वस्तु समझाकर ताक में धर दिये जाते हैं। क्या यह इंसान के साथ बहुत बड़ा जुल्म और दुखदाई व्यथा नहीं है?

डाक्टरों और वैज्ञानिकों ने इंसानी जिन्दगी की इस उजड़ी हुई बहार को फिर से गुलोगुलजार बना देने के लिए अपनी दिन प्रति दिन की कोशिशों और तजर्बों की रौशनी में कुछ सिद्धांत (उसूल) बनाए हैं जिस पर अमल करके स्वस्थ और तवाना रहा जा सकता है।

कम खाइये : डॉ० फोर्ड के अनुसार स्वस्थ रहने का आसान और सरल तरीका कम खाने में हैं। इतना कम खाइये कि आहार की कमी का शिकार लगने लगें। भोजन की कमी को विटामिन और खनिज से पूरा कीजिए। ऐसा करने से भोजन की कमी पूरी होगी और शरीर का वज़न भी क़ाबू में रहेगा।

हमारे नबीकरीम (सल्ल०) ने भी फरमाया है कि भूख रखकर खाना खाओ और उस समय खाओ जब भूख लगे। आज की मेडिकल साइंस भी इस बात की शिफारिश कर रही है। रमज़ान के रोजे भी इसी सिद्धान्त की एक और उच्च मिसाल पेश करते हैं। इस महीने में रोजेदार देखने में कमज़ोर नज़र आता है मगर मेडिकली वह स्वस्थ होता है।

डॉ० फोर्ड में कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी में जिन चूहों पर लगी बन्धी भोजन व्यवस्था की तो मालूम हुआ कि उनकी उम्र आम चूहों की उम्र से तीन फीसदी अधिक लम्बी हो गई है।

अतः कम खाइये, स्वस्थ रहिये और लम्बी उम्र पाइये

ज़हनी दबाव कम कीजिए

विशेषज्ञ इस बात पर एक मत हैं कि मन की शान्ति से जिन्दगी की टूट फूट से किसी हद तक बचा जा सकता है। जेहनी तनाव के माहिर डॉ० मैलकन क्रूथर का कहना है कि वैज्ञानिक शोध ने साबित कर दिया है कि शान्ति रहने पर विशेष ध्यान देकर इंसान अपने शरीर के अन्दरूनी अंग की टूटफूट की रफतार को कम कर सकता है फलस्वरूप उम्र लम्बी हो सकती है। यदि आप यह महसूस करते हैं कि आप का शरीर इस तेजी के साथ कमजोर हो रहा है जैसा कि उसे नहीं होना चाहिए तो आप मन की शान्ति के सिद्धान्त पर अमल कर के शरीर के आन्तरिक अंगों की टूट फूट को रोक सकते हैं।

यदि आपके चेहरे पर झुर्रियां पड़ रही हैं और त्वचा में कठोरता के चिन्ह पैदा हो रहे हैं तो यकीन कीजिए कि रक्तधमनियां (शिरयानें) भी सख्त और तुड़मुड़ हो रही हैं। तीस वर्ष या इसके लगभग के नौजवानों की रक्त धमनियों का तंग हो जाना ज़ाहिर करता है कि वह समय से बहुत पहले बूढ़े हो रहे हैं।

संतुलित व्यायाम कीजिए –

हलकी और संतुलित की जाने वाली रोज का वर्जिश (व्यायाम) मनुष्य को समय से पहले बूढ़ा होने से बचाती है क्योंकि पट्ठे शिथिल और बेकार रहने से ढीले पड़ जाते हैं। टोरंटो यूनिवर्सिटी के डॉ० राय शेफर्ड के अनुसार स्वास्थ और जवानी के स्रोत को पाने के लिए व्यायाम से बेहतर और आसान कोई अमल की राह नहीं। वह यह भी कहते हैं कि दर्मियानी उम्र का एक आदमी जो हफ्ते में तीन चार बार आधे घंटे

के लिए लगातार तेज तेज चलता है वह अपने आपको जवानी के दस वर्ष और मुहैया करता है।

जिल्द पर नमी लाने वाली क्रीम प्रयोग कीजिए:

हेल्थ साइंस सेंटर ब्रोक्लीन न्यूयाक के चेयरमैन डॉ० एलेन कहते हैं कि आप चाहे मर्द हों या औरत दिन में एक बार ऐसी क्रीम अवश्य लगाएं जो चेहरे को नमी प्रदान करे। ऐसा करने से जिल्द नर्म और मुलायम होगी और सुन्दर नज़र आएगी कभी कभी जिल्द के डाक्टर से ज़रूर मिलाए क्योंकि वह आपकी जाहिरी शक्ल व सूरत की बेहतरी, जिल्द की देखभाल और उसकी खराबी से बचाव के तरीके से अच्छी तरह अवगत है। वह आप को ऐसी क्रीम के प्रयोग की सलाह देगा जिस में विटामिन ए–ट्रोंटीनियमन शामिल होगी जो चेहरे पर पड़ी झुर्रियां दूर करने में किसी हद तक अवश्य सहायक सिद्ध होगी।

विटामिन प्रयोग कीजिए :

आहार के विशेषज्ञों (माहिरीन) को पूरा विश्वास है कि विटामिन के अधिक प्रयोग से उम्र को आखिरी हद तक अच्छी तरह पहुंचा जा सकता है। डा० लाएंस पावलिंग विटामिन 'सी' अधिक मात्रा में प्रयोग करने से सहमत हैं क्योंकि इस के प्रयोग से बीमारियों से बचाव में बहुत मदद मिलती है। यह नजला जुकाम और कार्बकल फोड़े से बचाव में भी सहायक होती है। डा० पीटरसन और ऐंडीशा, जिनहेंने लम्बी उम्र पाने पर पुस्तकें लिखी हैं उन्होंने भी विटामिन और एमनो एसिड आदि के प्रयोग पर बल दिया है।

ताजा हवा में सांस लेना :

लम्बी आयु के लिए ज़रूरी है कि ऐसी हवा में सांस लि जाए जिसमें आक्सीजन की मात्रा अधिक हो। आज के मशीनी में जहां कारखानों की चिमनियों से बराबर धुवां निकल रहा है वायु प्रदूषण (फिजाइ आलूदगी) बहुत अधिक होता है जो स्वास्थ के लिए बहुत हानिकारक है। ऐसी दशा में सुबह टहलना बहुत जरूरी है। टहलने के लिए ऐसे स्थान को चुनिये जहां साफ हवा अधिक मात्रा में मिले। जो लोग प्रातः टहलने के आदी हैं प्रायः वह लम्बी उम्र पाते हैं।

लैलतुल्क़द्र (क़द्र की रात)

इदारा

रमज़ान में एक रात होती है जो अ़रबी में लैलतुलक़द्र और उर्दू फ़ारसी में शबे क़द्र कही जाती है। क़ुर्आन शरीफ़ में बताया गया है कि यह हज़ार महीनों से बेहतर है। इस रात में फ़िरिश्ते और जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से हर क़िस्म की भलाई की बातें लेकर उतरते हैं। यह भलाई वाली रात है। इसकी भलाइयों और बरकतों का सिलसिला फ़ज्र के तुलूअ़ होने तक (भोर होने तक) चलता है।

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) की एक रिवायत के मुताबिक़ यह रात रमज़ान के आख़िरी अ़शरे (दशम) में किसी ताक़ (विषम) रात में आती है। रमज़ान के आख़िरी अ़शरे में एअ़तिकाफ़ करना सुन्नत है। जो शख़्स इस सुन्नत पर अ़मल करता है वह इस रात में अ़िबादत का शरफ़ (श्रेष्ठता) पा लेता है। चाहिए कि रमज़ान के आख़िरी अ़शरे, ख़ासतौर से ताक़ रातों में जागकर अ़िबादत करें। किसी मजबूरी से ऐसा न कर सकें तो आख़िरी अ़शरे में सहरी खाने से पहले या बाद में कुछ अ़िबादत कर लिया करें। और इशा व फ़ज्र की नमाज़ जमाअ़त से पढ़ें ताकि शबेक़द्र का कोई भाग अ़िबादत में गुज़र जाये। हज़रत आ़इशा ने हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से शबे क़द्र में पढ़ने वाली दुआ़ हासिल की थी। चाहिए कि आख़िरी अ़शरे की रातों में वह दुआ़ खूब पढ़ा करें। वह दुआ़ यह है "अल्लाहुम्म इन्नक अ़फ़ूवुन् तुहिब्बुल् अ़फ़्व फ़अ़फ़ू अ़न्नी" इस दुआ़ के पहले शब्द के "म" दूसरे शब्द के "क" और पांचवे शब्द के "व" को वैसे पढ़ें जैसे अकेले अच्छर को पढ़ते हैं अर्थात इन्नक् और इन्नक में अन्तर करें।

दुआ़ का अर्थ : ऐ अल्लाह आप मुआ़फ़ करने वाले हैं और मुआ़फ़ करने को पसन्द करते हैं मुझे मुआ़फ़ कर दीजिए।

याद रहे कि शअ़बान की पन्द्रहवीं रात को शबे बराअत कहते है। वह रात भी बड़ी बरकत वाली रात है जैसा कि पिछले पेर्चे (अंक) में बताया जा चुका है। बाज़ रिवायात से मालूम होता है कि शबे बराअत में हर शख़्स के बारे में उसके साथ साल भर तक होने वाली बातें लौहे महफ़ूज़ से आसमाने दुन्या पर आ जाती हैं। लैलतुल क़द्र (शबे क़द्र) रमज़ान में होती है। इसकी बरकात शबे बराअत से कहीं ज़ियादा हैं। उसी रात क़ुर्आन मजीद आसमाने दुन्या पर उतारा गया फिर वहां से ज़रूरत के मुताबिक़ हमारे हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) पर उतरता रहा। और २३ बरसों में पूरा उतरा।

सीरते सहाबा

मुहसिना फ़ारूक़ी

हज़रत अबूजर ग़िफ़रानी (रज़ि०)

(दूसरी किस्त)

इस्लाम की दौलत से मालामाल होकर जब आप घर की तरफ लौटे तो खुशी से फूले न समाते थे दिल में लगी हुई थी कि जिस तरह मुझे ये दौलत मिली है उसी तरह मेरे दूसरे भाई भी इस दौलत को हासिल कर लें।

घर आकर सबसे पहले अपने एक भाई अनीस के सामने इस्लमा पेश किया और उसकी खूबियां उन्हें समझायीं वह मुसलमान हो गये अब आप एक से दो हो गये इस लिए हिम्मत बढ़ी और एक दूसरे भाई आमना के सामने उन दो बुजुर्गों ने उस दौलत को पेश किया अपने मज़हब की ख़राबियां और इस्लाम की खूबियां उन्हें समझाई आमना हज़रत अबूज़र (रज़ि०) ही के तो भाई थे अक्लमन्द और सूझ बूझ वाले थे बात सही थी कैसे न मानते तुरन्त मुसलमान हो गये दो से तीन हुए और हिम्मत बढ़ी अबकी मरतबा अपने पूरे कबीले के सामने इस्लाम को पेश किया वह बहुत दिनों से हज़रत अबूज़र (रज़ि०) के नये ख्यालात को सुन रहे थे इस बार भी उन्होंने कोई नई बात नही कही थी हां उस समय ये अपने दिल से कहते थे मगर इस बार वह कहते थे कि ये मेरा ख्याल नही बल्कि खुद अल्लाह ने अपने फ़रिश्ते हज़रत जिब्रईल (अलै०) के ज़रिये ये तालीम और ये दीन, मक्का में मुहम्मद (सल्ल०) पर उतारा है उनकी क़ौम ने खामोशी से सुना और सोचा तो इसी फ़ैसले पर पहुंचे कि इस्लाम से अच्छा दीन इस समय दुनिया में कोई नहीं और आधा कबीला उसी वक्त मुसलमान हो गया।

हर वक्त के साथ रहने सहने से मुसलमानों के अच्छे अख्लाक और सच्ची इस्लामी तालीमात ने बाक़ी लोगों पर भी असर किया और हिजरत के मौक़े पर वह सब भी मुसलमान हो गये इस तरह आप की तब्लीग़ से पूरा क़बीले का कबीा मुसलमान हो गया।

हिजरत

मक्का में जब काफिरों का जुल्म ज्यादा हुआ तो मुसलमान छिप–छिप कर मदीना आने लगे मदीना के बहुत से लोग मुसलमान हो चुके थे वह उनकी बहुत इज़्ज़त करते उन्हें अपना भाई बना कर रखते थोड़े दिनों में खुद नबी (अलै०) भी मक्का छोड़ कर मदीना चले आये।

मक्का के अलावा दूसरी जगहों के मुसलमान भी आ आकर मदीना में बस गये हज़रत अबूज़र (रज़ि०)। भी हिज़रत करके मदीना आ गये ।

ग़ज़वे

हज़रत अबू ज़र (रज़ि०) हिजरते नब्वी (सल्ल०) के कई बरस बाद मदीना मुनव्वरा पहुंचे उस समय तक बदर, उहद और ख़न्दक वगैरा के मअ़रके हो चुके थे इस लिए वह उनमें से किसी में भी शरीक न हो सके उनके आने के बाद सबसे बड़ा गज़वा "गज़व–ए–तबूक" हुआ।

तबूक में रूमी फौजों से मुक़ाबला करना था हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को मालूम हुआ कि रूमी शहनशाह मदीना पर हमला करने वाला है इस लिए खुद ही पेश क़दमी करके चले मौसम बहुत ही गरम था और वह भी अरब की गर्मी, हर तरफ आग बरस रही थी इसके अलावा वह खेतियां कटने के लिए तय्यार खड़ी थी बहुत सख्त वक्त था फिर मुक़ाबला भी दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त से था रोमियों की हैबत सदियों से दिलों पर बैठी हुई थी मगर अल्लाह के बन्दे इन तमाम मुश्किलों के बावजूद मुकाबले के लिए निकल खड़े हुए हज़रत अबूज़र (रज़ि०) भी साथ थे लेकिन उन का ऊंट बहुत सुस्त था वह उसे बार–बार मारते मगर चन्द कदम चल कर वह फिर रूक जाता हज़रत अबूजर (रज़ि०) ने बहुत कोशिश की मगर फौज के साथ न चल सके जब बहुत पीछे हो गये तो ऊंट छोड़ दिया और सामान सर पर लाद कर मैदाने जंग की तरफ पैदल चले हज़रत (सल्ल०) ने जब आगे पहुंच कर पड़ाव किया तो एक सहाबी ने आकर कहा या रसूलल्लाह अबुजर नहीं आए थोड़ी ही देर बाद लोगों ने बहुत दूर उफक पर एक साया सा देखा किसी ने कहा कोई आ रहा है हज़रत (सल्ल०) ने फरमाया अबूजर होंगे जब करीब आए तो लोगों ने पहचान लिया वह अबूजर ही थे हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने फ़रमाया या अल्लाह अबूज़र पर रहम कर वह अकेले चलते हैं, अकेले मरेंगे और अकेले ही क़ियामत के दिन उठाए जाएंगे मुसलमान जंग के लिए पहुंच तो गये मगर लड़ाई नहीं

हुई क्योंकि मुसलमानों के जोश वल्वला को देखकर रोमियों की हिम्मत न पड़ी कि मुकाबला के लिए मैदान में आएं।

आपका इल्म

आपके अन्दर गौर व फिक्र की आदत हमेशा से थी सोच विचार ही ने उन्हें अल्लाह तआला का ख्याल दिलाया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की खिदमत में पहुंचाया जब आप (सल्ल०) के साथ रहने का मौक़ा मिला तो हर बात को कुरेद–कुरेद कर पूछने लगे आप खुद ही बयान करते थे कि मैं हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) से हर बात को पूछता था यहां तक कि कंकरियों के बारे में भी सवाल करता रहता हमेशा साथ रहने और गौर–व फिक्र की वजह से हदीस में बहुत महारत पैदा हो गई थी मगर आप की बयान की हुई हदीसें बहुत कम हैं क्योंकि आप हमेशा अकेले रहना पसन्द करते थे मजलिसों में बुहत कम आते जाते थे इसलिए हदीसें बयान करने का मौक़ा न मिलता हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि०) उस जमाने के बहुत बड़े आलिम थे लोग उन्हें हिब्रूल उम्मा (उम्मत के बड़े आलिम) कहा करते थे लेकिन हज़रत अबूज़र (रज़ि०) को भी हज़रत उमर (रज़ि०) हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि०) के बराबर समझते थे।

आपकी कनाअत

हज़रत (सल्ल०) की वफ़ात के बाद आप की तबीयत मदीना से उपचार हो गई मगर हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) की वजह से रूके रहे जब आपकी भी वफात हो गई तो मदीना से घबराकर शाम चले गये और वहीं रहने लगे।

हज़रत उमर (रज़ि०) के जमाने तक तो मुसलमान बहुत ही सादा ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे वह सिर्फ इस्लाम की सर बुलन्दी चाहते थे फटे पुराने लिबास पहनते और मोटा झोटा खाने खाते मगर बाद में फतेहयाबी की ज्यादती से मुसलमानों के पास रूपया काफी हो गया फिर अजामियों और नौ मुस्लिमों से मेल जोल शुरू हुआ इस लिए सादगी और मेहनत मशक्कत की वजह से मिजाजों में नफासत आ गई अब मुसलमान ऊंचे–ऊंचे महल्लों में रहने लगे अच्छे से अच्छा खाते और अच्छे से अच्छा पहनते।

हज़रत अबुज़र (रज़ि०) ने हज़रत (सल्ल०) का ज़माना देखा था हज़रत अबूबक्र सिद्दीक (रज़ि०) के जमाने की सादगी भी निगाहों के सामने थी और नक्शा भी आंखों में घूम रहा था कि पेवन्द लगे हुए कपड़ों में हज़रत उमर (रज़ि०) बैतुल मुकद्दस में दाखिल हो रहे हैं वह इस आराम की ज़िन्दगी और माल व दौलत को इस्लाम के खिलाफ समझते थे। उनका ख्याल था कि अल्लाह पर भरोसा रखो सिर्फ आज की ज़रूरत पूरी कर लो जो बचे ज़रूरतमन्दों में बांट दो कल के लिए खुदा पर भरोसा रखो जिसने आज दिया है वही कल भी देगा यह जमा करना कनाअत के खिलाफ और तवक्कुल का दुश्मन है।

जब आप को सालाना वज़ीफा मिलता तो उससे अपने खाने पीने और दूसरी ज़िन्दगी की हर ज़रूरत का सामन खरीद कर बाकी ख़ैरात कर देते ।

हज़रत मुआविया (रज़ि०) से इख्तिलाफ

आप जिस बात को हक समझते उसके कहने से न डरते जिसके बारे में मालूम हो जाता कि वह रूपया जमा करता है उससे बहुत नाराज होते हज़रत मुआविया (रज़ि०) उस समय शाम के हाकिम (गवर्नर) थे आप रूमी शहंशाही के मुकाबले में थे उन लोगों पर ज़ाहिरी शान व शौकत के बगैर रूअब नहीं पड़ता था इस लिए हज़रत मुआविया (रज़ि०) को शान से रहना पड़ता था हज़रत उमर (रज़ि०) ने भी इसी खयाल से उन्हें इजाज़त दे दी थी लेकिन हज़रत अबूजर (रज़ि०) की नजर में इस्लाम के बाद दुनिया की कोई हक़ीक़त न थी, इस लिए वह बदलते हुए हालात को खातिर में न लाते थे वह हज़रत मुआविया (रज़ि०) के तरज को पसन्द न करते और नादार लोगों के सामने ये आयत पढ़ते थे।

और जो लोग सोना और चांदी जमा करते हैं और उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते उनको दर्दनाक अज़ाब की खुशखबरी सुना दीजिए।

(सूरः तौबः)

लेकिन हज़रत मुआविया (रज़ि०) उसे सही न समझते थे वह कहते थे कि ये आयत इस मौके की नहीं है बल्कि उन लोगों के लिए है जो सोना चांदी जमा करते हैं मगर जकात नहीं निकालते उन लोगों के बारे में अल्लाह ने कहा है कि वह लोग आग खाते हैं और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है ज़कात दे देने के बाद मुसलमान को हक है कि जितना चाहे जमा करे कुछ दिनों तक ये सूरत चलती रही आखिर में हज़रत मुआविया (रज़ि०) ने खलीफ़–ए–वक़्त हज़रत उस्मान (रज़ि०) को लिखा कि – हज़रत अबूजर (रज़ि०) के सोच का लोगों पर बुरा असर पड़ रहा है इसलिए उन्हें शाम से हटा लिया जाए।

हज़रत बिलाल बिन रिबाहा (रज़ि०)

(मस्जिदे नबवी के खास मुअज़्ज़िन)

एम. एफ़

हज़रत बिलाल बिन रिबाह (रज़ि०) हबशी नस्ल के थे इनका जन्म मक्का में हुआ, इनके बाप रिबाह बनी जुमह के गुलाम थे हज़रत बिलाल (रज़ि०) को गुलामी विरासत में मिली थी एक गुलाम के यहां जन्म लिया और गुलामी की हालत में ही बचपन गुजारा जवान हुए तो गुलामी का यही तौक गले में पड़ा हुआ था मक्का की गलियों में ये काला हबशी नौजवान जिस्मानी गुलामी के बावजूद दिमागी तौर पर आज़ाद था उसे यह गवारा न था कि उसकी सोच व फिक्र के धारों पर भी कोई पाबन्दी लगाए वह इस बात पर भी कुढ़ता रहता था कि उसे केवल इस लिए गुलाम बना लिया गया था कि उसका बाप गुलाम था ऐसी ही सोच के साथ बिलाल जवानी की मंजिल तय कर रहा था ऐसी ही हालत में बिलाल (रज़ि०) को मक्का में एक आवाज़ सुनाई दी ये आवाज़ अहले मक्का के लिए अजनबी और नई थी परन्तु बिलाल का दिल इस आवाज़ से मानूस था कई बार दिल से चाहा कि कोई बात हक के लिए उठाए जो अपने आपको मअ़बूद समझते हैं उनके खिलाफ नारा बुलन्द करे। उसकी रातों की नींद हराम हो चुकी थी परन्तु जब बिलाल ने लाइलाह इल्लल्लाहु की आवाज़ सुनी तो उसे ऐसा लगा जैसे उसके दिल की मुराद पूरी होने वाली है।

इस्लाम के अनुसार इंसान का सर केवल एक जगह झुकना चाहिए केवल एक ही अल्लाह है ज़िस को सब हक़ हासिल है और उसी अल्लाह के सामने हर एक को झुकना चाहिए बिलाल ने यह सुना तो तुरन्त इस्लाम की तरफ लपके और अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) के मानने वालों में शामिल हो गये बनू जुमहा के लिए यह आश्चर्य की बात थी कि उनका गुलाम उनके खिलाफ बग़ावत बुलन्द कर दे और खुल्लम खुल्ला यह कह दे कि मैं सिवाए अल्लाह के किसी का बन्दा नही और मैं मुहम्मद सल्ल० के सिवा किसी का अपना सरदार नहीं मानता वह एलान जिसे एक आजाद इंसान भी करते हुए डरता है एक गुलाम के होंटों पर आया तो कुरैश के सरदार गुस्से से कांप उठे।

हज़रत बिलाल (रज़ि०) को तरह–तरह की तकलीफें दी जाती थी उन्हें तप्ती हुई रेत पर लिटा कर सजा दी जाती उन्हें ज़मीन पर ठीक दोपहर के वक्त धूप में लिटाया भी जाता और पथरीली ज़मीन में रस्सों से पैर बांध कर घसीटा भी जाता और जिस्म पर भारी बोझ लाद दिया जाता और उस वक्त काफ़िर उनसे कहते अब मुहम्मद (सल्ल०) के अल्लाह से बाज आते हो कि नहीं हज़रत बिलाल (रज़ि०) का मालिक उमय्या बिन खलफ इस मामले में सबसे आगे था उसने कई बार हज़रत बिलाल (रज़ि०) को मुर्दा जानवरों की खाल में लपेट कर सी दिया और फिर दिनभर धूप में डाल दिया खाल गर्मी की वजह से सूख कर बिलाल को जकड़ लेती कभी–कभी उमय्या बिन खलफ उनको रास्ते में जकड़ कर हाथ पैर बांध देता और धूप में फेंक देता और कहता "तुम्हारा अल्लाह लात व उज़्ज़ा है" परन्तु बिलाल (रज़ि०) की जुबान यही जवाब देती अहद–अहद बिलाल रज़ि० के मालिक हर रोज बिलाल की तकलीफें बढ़ाता एक दिन सिद्दीके अकबर (रज़ि०) ने जो बड़े रहम दिल थे कुछ रकम दे कर बिलाल (रज़ि०) को आजाद करा लिया।

बिलाल (रज़ि०) अब आज़ाद थे अब उनकी गर्दन में केवल एक अल्लाह की गुलामी और मुहम्मद (सल्ल०) की पैरवी का तौक था इनके सिवा अब वह किसी के सामने झुकने के लिए तैयार न थे उन्हें अब ऐसे साथी मिल गये थे जिनमे से कोई उनके काले रंग का मज़ाक न उड़ाता न ही कोई उनके मोटे होंटों और ऊंचे दातों का मजाक उड़ाता था इससमय में अब हर आदमी उनसे बहुत खुलूस और मुहब्बत से पेश आता था अब एक मामूली गुलाम न थे बल्कि इस्लाम बिरादरी के मुमताज़ रुक्न थे।

मक्का की ओर से मदीना मुनव्वरा की तरफ हिजरत का हुक्म हुआ तो बिलाल (रज़ि०) भी रवाना हुए और मदीना पहुंच गये हुजूर (सल्ल०) तशरीफ लाए तो हज़रत बिलाल (रज़ि०) से अबू रूवैहा अन्सारी का मेल जोल करा दिया दोनों भाइयों में इतनी ज्यादा महब्बत थी कि बिलाल जब कहीं जाते तो अपने तमाम कामों की निगरानी

अबू रूवैहा के ज़िम्मे कर जाते उमर फ़ारूक की हुकूमत के बाद उन्होंने अपना वज़ीफा भी अपने इस्लामी भाई के नाम कर दिया।

मदीना पहुंच कर जब नमाज़ बा जमाअ़त अदा करने का हुक्म आया फिर अज़ान का फ़रमान हुआ तो हज़रत बिलाल (रज़ि०) बे हुजूर (सल्ल०) ने मुअज्ज़िन पद पर नियुक्त किया।

आपकी आवाज़ में ऐसा जादू था कि जो सुनता तड़प जाता सफर में हज़रत बिलाल (रज़ि०) हुजूर (सल्ल०) के साथ रहते आपकी आवाज़ में ऐसी तासीर थी कि तमाम मुसलमान शिद्दत से इन्तिजार करते कि कब नमाज़ का वक्त हो और अज़ाने बिलाली कानों तक पहुंचे।

हुजूर (सल्ल०) की वफात के बाद हज़रत बिलाल (रज़ि०) बहुत कम अजान दिया करते थे जब कि सहाबा (रज़ि०) उनकी अजान के मुतमन्नी रहते थे दूसरे खलीफा हज़रत उमर(रज़ि०) सन १६ हिजरी में बैतुल मुकद्दस की जीत के मौक़े पर मुल्क शाम की तरफ गये मुकाम जाबिया पर सहाब–ए–किराम (रज़ि०) के एक गिरोह ने उनका स्वागत किया बिलाल रज़ि० भी मौजूद थे हज़रत अबू उबैदा (रज़ि०) इब्ने जर्रार सिपहसालार ने अमीरूल मोमिनीन से कहा कि वह बिलाल (रज़ि०) से अज़ान की फरमाइश करें हज़रत उमर (रज़ि०) की फरमाइश पर जब हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने अज़ान दी तो कई बरसों बाद एक पहचानी और न भूलने वाली आवाज़ बुलन्द हुई तमाम सहाबा की आंखों में आंसू जारी थे हज़रत उमर फारूक (रज़ि०) हज़रत अबू उबैदा (रज़ि०) और हज़रत मआ़ज़ बिन जबल (रज़ि०) जैसे सहाबा भी आंसू न रोक सके और ज़ारों कतार रोए।

दूसरे मौके पर जब आपने अज़ान दी तो वह वक्त था जब आप शाम से मदीना मुनव्वरा आए इमाम हसन और इमाम हुसैन (रज़ि०) को गले लगाकर चूमा और हज़रत हसनैन (रज़ि०) ने कहा कि बिलाल (रज़ि०) आज अजान दीजिए हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने इस ख्वाहिश पर सुबह सादिक़ के वक्त मस्जिदे नब्वी की छत पर खड़े होकर अजान बुलन्द की मदीना के रहने वाले तड़प गये बहुत से घरों से सिस्कियों की आवाजें सुनाई दे रही थीं लोगों की आंखों से आंसू बह रहे थे और वह मस्जिदे नबवी की तरफ लपके जा रहे थे हुजूर (सल्ल०) के बाद ये केवल दो मौक़े हैं जब हज़रत बिलाल ने अजान दी।

हज़रत बिलाल (रजि०) अपने ज़माने के एक मुजाहिद थे अज़ान के अलावा उन्हें तलवार और बात करने का सलीका भी था जंगे बद्र में उनकी बहादुरी ज़ोरों पर थी उमैया बिन खलफ़ जो मक्का की वादियों में उन को बहुत दिनों तक परेशान किया करता था जब आपके सामने आया तो आपने इस इस्लाम के दुशमन को ललकारा उसने तुरन्त आप पर हमला कर दिया परन्तु बिलाल (रज़ि०) की तलवार ने उसका काम तमाम कर दिया।

हज़रत बिलाल (रज़ि०) फतेह मक्का तक तमाम लड़ाइयों में हुजूर (सल्ल०) के साथ थे जब हुजूर (सल्ल०) मक्के में विजयी होकर दाखिल हो रहे थे उस वक्त वह हुजूर–ए–अकरम (सल्ल०) के साथ थे हुजूर जब खान–ए–कअ़बा के अन्दर दाखिल हुए तो बिलाल (रज़ि०) ओसामा (रज़ि०) बिन ज़ैद (रज़ि०) और उस्मान (रज़ि०) बिन तलहा आप (सल्ल०) के साथ थे।

हुजूर (सल्ल०) के देहान्त के बाद दौरे सिद्दीकी में हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने जिहाद में शामिल होने की इजाज़त मांगी और अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि०) से कहा खलीफ–ए–रसूल आपने मुझे आज़ाद किस लिए कराया था कि मैं आपके साथ में रहूंगा अल्लाह के लिए मुझे आज़ादी का परवाना दिलाया था।

पहले खलीफा ने कहा "अल्लाह के लिए" कहा कि फिर मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं अल्लाह की राह में जिहाद में जाऊं पहले खलीफा (रज़ि०) ने यह सुन कर बिलाल (रज़ि०) से कहा बिलाल (रज़ि०) इस दुनिया में मुझे तुम्हारे मश्वरे और रहनुमाई की ज़रूरत है इस लिए मैं खुदा का वास्ता देकर तुमसे कहता हूं कि मुझे जुदाई का गम न दो।

हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने सिद्दीके अकबर (रज़ि०) के एहतिराम में रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मदीना ही में रहना कुबूल कर लिया हज़रत अबू हुरैरा के इन्तिक़ाल के बाद हज़रत उमर रज़ि० जब खलीफ़ा हुए तो हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने फिर जिहाद में शरीक होने की इजाज़त मांगी।

फ़ारूके आज़म (रज़ि०) ने भी उन्हें रोकना चाहा मगर उनका इसरार देख कर उन्हें इजाज़त दे दी वह मदीना से सीधे शाम पहुंचे और हज़रत उबैदा (रज़ि०) के ज़माने में रूमी फ़ौजों से लड़ते रहे बहुत ज़माने तक जिहाद में मसरूफ़ रहे जिस फ़ौज में बैतुल मुकद्दस पर फत्ह हासिल किया उसमें हज़रत बिलाल भी शामिल थे जब रूमी

हुकूमत का जोर टूट गया और शाम और उसके क़रीब के तमाम इलाके रूमी इस्लाम के ख़िलाफ़ हो गये तो हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने शाम में रहने का फैसला कर लिया और इस सिल्सिले में भी हज़रत उमर (रज़ि०) से इजाज़त मांगी।

दूसरे खलीफा ने हज़रत बिलाल (रज़ि०) की ख्वाहिश पर उन्हें शाम में लगातार रहने की इजाज़त दे दी हज़रत बिलाल (रज़ि०) के इस्लामी भाई हज़रत अबु रूवैहा अन्सारी (रज़ि०) भी उनके साथ ही रहने लगे हज़रत अबूदर्दा अन्सारी (रज़ि०) पहले ही इस इलाके में रहते थे हज़रत बिलाल ने उनके खानदान में निकाह करना चाहा इस लिए रिश्ता मांगा, कहां एक हब्शी और कहां मदीना का एक ऊंचा खानदान 'परन्तु इस्लाम ने खानदानी असबियत (बिरादरी) की जड़ काट दी इसलिए हज़रत अबू दर्दा ने पैग़ाम कुबूल कर लिया और हज़रत बिलाल (रज़ि०) की शादी उनके खानदान में हो गई।

हज़रत बिलाल (रज़ि०) का मकाम समाज में बहुत बुलन्द था एक बार एक हब्शी मुसलमान ने अरब के किसी इज़्ज़तदार औरत के पास निकाह का पैग़ाम भेजा औरत के ख़ानदान वालों ने पूछा तुम्हारा नाम और जात क्या है जवाब दिया मैं बिलाल का भाई हूं''।

हज़रत बिलाल (रज़ि०) से पूछा गया तो उन्होंने कहा कि हां यह मेरा भाई है यह सुनकर उस खानदान ने कहा ऐसे आदमी से रिश्ता करना हमारे लिए बहुत इज़्ज़त की बात है।

इससे पता चलता है कि हज़रत बिलाल (रज़ि०) को जो कभी गुलाम थे इस्लामी समाज में किस एहतिराम और इज़्ज़त की नज़र से देखा जाता था हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) जनाब बिलाल की बहुत इज़्ज़त करते थे और अपने खलीफा होने के जमाने में उनसे मशविरा लिया करते जनाब उमर (रज़ि०) के दिल में भी उनकी बहुत इज्जत थी आपकी मजलिस में जब भी बिलाल आते आप उन्हें अपने साथ बिठाते हज़रत उमर (रज़ि०) उनकी बातें करते तो कहा करते बिलाल हमारे सरदार हैं और हमारे आक़ा (सल्ल०) के गुलाम।

कभी–कभी अबू बक्र की बातें करते तो कहते ।

अबू बक्र हमारे सरदार थे और उन्होंने हमारे सरदार (बिलाल) को आजाद कराया था।

हज़रत बिलाल (रज़ि०) हुजूर सल्ल० के क़रीबी सहाबा में गिने जाते थे हर मजलिस में वह हुजूर की बातों को गौर से सुनते और फिर उनपर अमल भी करते हुजूर (सल्ल०) जब किसी मजलिस में शामिल होने के लिए जाते तो बिलाल तलवार हाथ में लिए आगे–आगे चल देते।

सफर में रात के वक्त जब सारे लोग आराम करने के लिए सो जाते तो बिलाल (रज़ि०) की ज़िम्मेदारी होती। एक बार रात के वक्त सफर कर रहे थे सहाबा थक गये तो कहा हुजूर (सल्ल०) इसी जगह पर पड़ाव डाल देना चाहिए आपने कहा सुबह की नमाज़ से ग़ाफिल हो जाओगे बिलाल (रज़ि०) ने कहा ''या रसूलल्लाह'' मैं सब को जगा दूंगा ये सुनकर हुजूर सल्ल० ने रुकने का हुक्म दे दिया सब लोग आराम से सो गये बिलाल (रज़ि०) पूरी रात टहलते रहे फिर ऊंट के कजावे से टेक लगाकर बैठ गये नींद का गल्बा हुआ और आपकी बैठे बैठे आंख लग गई नमाज फज्र के वकत किसी की आंख न खुली सूरज निकल आया और हुजूर अकरम (सल्ल०) सबसे पहले जगे और बिलाल (रज़ि०) को पुकार कर कहा बिलाल (रज़ि०) तुम ने अपनी जिम्मेदारी क्यों अदा न की कहा या रसूलल्लाह ऐसी गफ्लत तारी हुई कि मुझे कुछ होश न रहा आपने इर्शाद फरमाया कि अभी अज़ान दो और लोगों को नमाज़ के लिए जमा करो। आप (अल्लाहुम्मा सल्लि व सल्लिम) की वफ़ात के बाद सहाबा हज़रत बिलाल (रज़ि०) से मसाएल पूछा करते बिलाल (रज़ि०) को भी हुजूर–ए– अकरम (सल्ल०) की याद सताती रहती थी कभी आप का दिल महबूब (सल्ल०) की याद से ग़ाफ़िल न हुआ था शाम में रहने के दौरान एक ख्वाब में हुजूर अकरम (सल्ल०) से मुलाक़ात हुई हुजूर (सल्ल०) ने कहा बिलाल क्या दुनिया से अभी दिल नहीं भरा क्या हमारी ज़ियारत की ख्वाहिश नहीं हज़रत बिलाल (रज़ि०) बेताबी के आलम में ख्वाब से उठ बैठे मदीना का रूख किया रौज़–ए–अकदस से आंखों का ठण्डा किया हसन (रज़ि०) व हुसैन (रज़ि०) को गले लगाया और कई बार चूमा सन२० हिजरी में हज़रत बिलाल (रज़ि०) का ६० साल में इन्तिक़ाल हो गया और हुजूर–ए–अकरम (सल्ल०) से जा मिले।

आपकी इस्लामी बिरादरी में जो इज़्ज़त थी उसे देख कर कई बार आपका नफस मगरूर होता तो लोगों के सामने कहा करते मैं एक हब्शी

गुलाम था बदसूरत और मेरा कोई सहारा न था मुझे इस्लाम की नेमत मिल गई और मैं खास हो गया मेरी यह हैसियत मुझे जो आज मिली है केवल इस्लाम की बरकत और मुहम्मद अरबी (सल्ल०) के साथ से है मैं वही हब्शी गुलाम का बेटा बिलाल हूं जिसे मक्का में हकीर तरीन गुलाम समझा जाता था। हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने कई शादियां की? परन्तु उनकी कोई औलाद न हो सकी फिर भी पूरी दुनिया में उनकी रूहानी आलादें और उनके नाम लेने वाले करोड़ों की तादाद में आज भी मौजूद हैं सारे मुसलमान उस हब्शी मर्द पर फख्र करते हैं अल्लाह तआला हर मुसलमान को रूहे बिलाली से सरफ़राज़ करें। (आमीन)

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ज़ौजे मुतह्हरा

हज़रत ज़ैनब (उम्मुल मसाकीन) रज़ि०

सादिका तस्नीम फ़ारूक़ी

इन का नाम जैनब था, सिल्सिल–ए–नसब यह है, ज़ैनब बिन्ते खुजैला बिन अब्दुल्लाह बिन उमर बिन अब्द मनाफ बिन हिलाल बिन आमिर बिन सअसअ यह फकीरों व गरीबों को बहुत दिलेरी के साथ खाना खिलाया करती थीं, इसलिए उम्मुल मसाकीन की कुन्नियत के साथ मशहूर हो गयीं, हज़रत मुहम्मद सल्ल० से पहले अब्दुल्लाह बिन जहस (रज़ि०) के निकाह में थीं, अब्दुल्लाह बिन जहश ने जंगह उहद में शहादत पाई और हजरत मुहम्मद सल्ल० ने इसी साल उनसे निकाह कर लिया निकाह के बाद आप हजरत मुहम्मद (सल्ल०) के पास केवल दो तीन महीने रहने पाई थीं कि उनका इन्तिकाल हो गया आप हज़रत (सल्ल०) की ज़िन्दगी में हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) के बाद केवल यही एक पत्नी थीं, जिन्होंने वफात पाई आपकी हजरत (सल्ल०) ने खुद नमाज जनाजः पढ़ाई और जन्नतुल बकीअ में दफन हुई, वफात के समय उनकी उम्र ३० साल की थी। (असाबा भाग ८, पेज ६४, ६५ सीरतुन्नबी भाग २)

हमारे हिन्दू भाई भी समाज सुधार में लगे हुए हैं :

धर्माधिकारियों की जेबें गरम कर के अंधश्रद्धालु आखिर पाते क्या हैं ?

रमेश चन्द्र

अपना देश समृद्धि और सम्पन्नता में अभी भी ऐसे कितने ही देशों से पिछड़ा हुआ है, जिन्हें दूसरे विश्व युद्ध के बाद स्वतंत्रता मिली। सदियों की गुलामी, विदेशी शासकों का शोषण, अशिक्षा और अज्ञान इस गरीबी के कारण कहे जा सकते हैं। पर ये कारण तो उन सभी देशों के साथ जुड़ रहे हैं जो पांचवें, छठवें दशक तक गुलाम रहे, फिर हम ही क्यों इतने गरीब हैं ?

धर्म के प्रति अंधश्रद्धालु

इस का एक ही उत्तर है – अंधश्रद्धा, अधिकांश भारतीय जनता धर्म के प्रति बुरी तरह अंधश्रद्धालु हैं; यदि व्यक्ति सम्पन्न होगा तो सरकारी टैक्स चुकाने से बचने के लिए पूरी पूरी कोशिश करते हुए भी धर्म के नाम पर अंधाधुंध खर्च करता जाएगा और यदि गरीब होगा तो जरूरी खर्चों में कटौती कर के अपनी तथाकथित धार्मिकता को प्रमाणित करना चाहेगा।

छोटेमोटे रीतिरिवाजों, व्याहशादियों या जन्ममृत्यु के अवसरों पर होने वाले खर्चों को छोड़ भी दें तो कुंभ पर्व, संक्रांति पुण्य, सोमवती नहान, चारों धाम, धार्मिक मेलों और सत्संग समारोहो में लोगों का इतना अधिक पैसा बेकार चर्चा होता है कि हिसाब लगाने पर वह अरबों रुपए प्रति वर्ष बैठेगा।

उदाहरण के लिए कुंभ पर्व और सिंहस्थ मेलों को ही लें। प्रति बारहवें वर्ष हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में, ज्योतिषगणना के अनुसार विशिष्ट ग्रहयोग आने पर विशाल मेले लगते हैं, इन चारों स्थानों पर प्रति चौथे वर्ष पड़ने वाले विशिष्ट ग्रहयोग में कुंभी मेले लगते हैं।

इन मेलों में लाखों लोग इकट्ठे होते हैं और सरकार को उनकी सुखसुविधाओ और सुरक्षा आदि का प्रबन्ध करने के लिए करोड़ों रुपए खर्च करने पड़ते हैं।

ये तो हुए सरकारी खर्च के आंकड़े ... बारह वर्ष में चार स्थानों पर कुंभ पर्व की परंपरा न जाने कब से चली आ रही है। इतनी विशाल संख्या में लोगों का इन मेलों में आने का मुख्य कारण है – अंधश्रद्धा, हिन्दू धर्म के अपौरुषेय ग्रंथ वेद तक में इस का उल्लेख आता है। (साभार सरिता मुक्ता)

सिर दर्द से छुटकारा पाइये

अर्शद शहाब

सिरदर्द एक आम शिकायत है। वैज्ञानिक अभी तक सिरदर्द का ठीक ठीक कारण नही बता सके। परन्तु शोध करने वालों ने इस के इलाज में विशेष प्रगति की है। आमतौर पर सिरदर्द का सम्बन्ध किसी बड़ी बीमारी से नही होता अतः आपको अधिक चिंतित नही होना चाहिए परन्तु जितनी जल्द आप इसके इलाज के लिए कोई अमली कदम उठांगे उतनी ही जल्दी आप उस पर आसानी से काबू पा सकेंगे।

तनाव के कारण होने वाला सिरदर्द

आमतौर पर तनाव सिरदर्द का बड़ा कारण समझा जाता है तथापि शोधकर्ता अभी तक सिरदर्द का तनाव से कोई स्पष्ट सम्बन्ध साबित नहीं कर पाए हैं। यही सिर दर्द कभी कभार भी हो सकता है और लगातार भी। कभी कभी तो यह महीना भर या पन्द्रह दिन तक जारी रहता है।

तुरंत डाक्टर से संपार्क कीजिए यदि :

- अचानक आप के सिर में दर्द शुरू हो जाए (विशेष कर यदि आपकी उम्र पचास साल से अधिक हो)
- खांसने, झुकने आदि से दर्द में इजाफा हो।
- आपके सिरदर्द का सम्बन्ध बुखार, गर्दन के अकड़न, दिमागी परेशानी, कठोर वारतालाप, ऊंध,बार बार मतली आने से आपका वर्तमान सिर दर्द का लक्षण पिछले सिर दर्द के लक्षण से भिन्न हो।
- यदि आप का सिर दर्द बर्दाश्त से बाहर हो।
- दर्द निवारक दवाएं अधिक प्रयोग न करें।

इलाज : कभी कभार होने वाला सिर दर्द बाजार में मिलने वाली दर्द निवारक दवाओं से ठीक हो जाता है। हमेशा होने वाले सिर दर्द में डाक्टर डिपरेशन कम करने वाली दवाएं देते हैं। प्रभावित भाग को ठंडक या भाप पहुंचाने से या कनपटी को मसाज करने से भी दर्द में कमी हो जाती है। इसी प्रकार नियमित व्यायाम से भी लाभ होता है।

आधे सिर का दर्द : आधे सिर का दर्द बहुत कम पाया जाता है। यह तनाव के कारण होता है। लगभग पन्द्रह प्रतिशत लोग इसके मरीज पाए गए हैं। जिन में तीन चौथाई महिलाएं हैं। कम से कम दस फीसदी मरीज खतरे का लक्षण महसूस करते हैं जैसे आंखों के सामने बिजली चमकने का एहसास या कभी कभी चेहरे बाजू या जबान झनझनाहट महसूस होना या इन अंगों का सुन होना आदि।

लक्षण : इसमें सिर के एक भाग में दर्द होता है जो सीढ़ियां चढ़ने, उतरने की हरकत करने से भी बढ़ जाता है। दूसरे लक्षणों में मतली के साथ–साथ रोशनी और शोर से तकलीफ बढ़ जाती है। यह दर्द आमतौर पर चार घंटे से तीन दिन तक जारी रहता है।

इलाज : आमतौर पर लोगों को डाक्टरों की दी हुई दवाओं से ही आराम हो जाता है। बाज़ मरीज़ों को स्प्रीन, मतली रोकने वाली दवाई मिटो क्लोपैरामाईड के साथ मिलाकर प्रयोग कराई गई और सफल परिणाम प्राप्त हुए। इसी प्रकार ट्रिपटान दवाइयां भी लाभदायक हैं। डाक्टरों का कहना है कि यह दवाइयां मतली के साथ–साथ दर्द को भी समाप्त कर देती हैं।

इस मर्ज में परहेज बहुत जरूरी है जैसे चाकलेट पुराना पनीर हवाबन्द कमरे, सुगन्ध आदि से परहेज करना चाहिए।

गिरोही सिरदर्द : यह सिरदर्द सबसे तकलीफ देने वाला सिरदर्द है। लेकिन ऐसा सिरदर्द बहुत कम होता है। इसके ६० प्रतिशत मरीज मर्द होते हैं। ऐसे मरीज बहुत सिग्रेट पीने वाला या बहुत अधिक शराब पीने वाले पाए गए हैं। गिरोही सिरदर्द हर बार निश्चित समय पर होता है। कुछ दिन, हफते या महीने जारी रहता है और फिर लम्बे समय के लिए ग़ायब हो जाता है।

लक्षण : अचानक सिर के एक तरफ अति अधिक तकलीफ देने वाले दर्द का सिलसिला शुरू हो जाता है। यह दर्द गुच्छों की शक्ल में हमलावर होता है। दूसरे लक्षण नाक का बहना, आंख से पानी आना और पपोटों का नीचे ढलक आना है। साधारणतः इस का हमला पन्द्रह मिनट से तीन घंटे तक जारी रहता है।

इलाज : कभी कभी पहले लक्षण के जाहिर होते ही शुद्ध आक्सीजन में सांस लेना लाभदायक होता है। बाज लोगों के प्रभावित ओर के नथुनों पर बेहोशी की दवा लगाने से भी आराम मिलता है। एरगोटामाइन और वेरो पमिल लाभदायक सिद्ध होता है। सिरदर्द की तमाम किस्मों के दौरान सिग्रेट और दूसरी नशा लानी वाली चीजों से परहेज करना चाहिए। इसी प्रकार अधिक जेहनी दबाव और मेहनत वाला काम भी नहीं करना चाहिए।

मौलाना इस्माईल शहीद (रह०) का

एक संक्षिप्त लेख

अनुवाद : मौलाना इम्तियाज अहमद नदवी

इलाही हजार हजार शुक्र तेरी जाते पाक का, कि आप ने हमको हजारों निअ़मतें दीं और अपना सच्चा दीन बताया और सीधी राह पर चलाया और अस्ल तौहीद सिखाई और अपने हबीब रसूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में बनाया और उनकी राह सीखने का शौक दिया और उनके नाइबों की महब्बत दी, जो उनकी राह बताते हैं और उनके तरीके पर चलाते हैं।

ऐ हमारे परवरदिगार अपने हबीब और उनकी आल औलाद व असहाब पर और उनके सब नाइबों पर हजार हजार दरूद व सलाम भेज।

और उनकी पैरवी करने वालों पर रहमत कर और हमको भी उनमें गिन ले और हमको उसी रसूल की राह पर जीते जी और मरते समय तक काइम रख और उन्हीं के अनुयाइयों में गिन रख, आमीन या रब्बल आलमीन

ईमान व यकीन बन्दगी की बुन्याद है: दुन्या के सारे आदमी अल्लाह के बन्दे हैं और बन्दे का काम बन्दगी करना है जो बन्दा बन्दगी न करे वह बन्दा नही और अस्ल बन्दगी ईमान का दुरुस्त करना है जिसके ईमान में कुछ खलल है उसकी कोई बन्दगी कुबूल नहीं और जिस का ईमान सही है उसकी थोड़ी बन्दगी भी बहुत है और हर आदमी को चाहिये कि ईमान दुरुस्त करने में पूरी कोशिश करे और उसके हासिल करेन को सब चीजों पर मुकद्दम रखे इस जमाने के लोग दीन की बातों में कितनी मनमानी राह चलते हैं, कुछ लोग पहलों की रस्मों को पकड़ते हैं, कुछ लोग बुजुर्गों के किस्सों को देखते हैं और कुछ लोग आलिमों की ऐसी बातें जो उन्होंने अपने जिहन की तेजी से निकाल ली हैं उनको प्रमाण मानते हैं और कुछ लोग अपनी अक्ल को दख्ल देते हैं, इन सब से बेहतर राह यह है कि अल्लहा व रसूल के कलाम को मूल अधार रखिये और उसकी सनद पकड़िये और अपनी अक्ल को कुछ दख़्ल न दीजिए बुजुर्गों और आलिमों की जो बातें अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुवाफिक हों सो उनको कुबूल कीजिए और जो मुवाफिक न हों सो उनको कुबूल न कीजिए और जो मुवाफिक न हों उनकी सनद न पकड़िये और जो रस्में उसके मुवाफिक न हो उनको छोड़ दीजिए।

और आम लोगो में जो यह मशहूर है कि अल्लाह और रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का कलाम समझना बहुत मुश्किल है और उसको समझने हेतु बड़ा इल्म चाहिए हम में वह ताकत कहां कि उनके कलाम को समझें, और उस राह पर चलना बुजुर्गों का काम है हमारी क्या ताकत कि उसके मुवाफिक चल सकें, बल्कि हमको यही बातें काफी हैं, सो यह बात गलत है इस लिए कि अल्लाह तआला ने फरमाया है कि कुर्आन मजीद में बातें स्पष्ट हैं उनका समझना मुश्किल नहीं, सूर–ए–बकरः की आयत नं. ६६ में फरमाया है।

अनुवाद– और बेशक हमने तो आप की तरफ सुलझी हुई और साफ आयतें उतारी इसका इन्कार बे–हुक्म (अवज्ञाकारी) लोगों के सिवा कोई भी नहीं करता।

आयत का निचोड़ यह है कि इन बातों का समझना कुछ मुश्किल नहीं बल्कि इन पर चलना केवल नफ्स (मन) को भारी पड़ता है इस वास्ते कि नफ्स को दूसरे की हुक्म बरदारी (आज्ञापालन) बुरी लगती है, इसी लिए जो बेहुक्म हैं वह इनसे इनकार करते हैं और अल्लाह व रसूल के कलाम को समझने हेतु बहुत इल्म नही चाहिए क्योंकि पैगम्बर तो नादानों को राह बताने, जाहिलों को समझाने और अशिक्षितों को शिक्षा देने आये थे। कुर्आने–पाक की सूर–ए–जुमा की आयत नं. ३ में अल्लाह तआला फरमाता है –

अनुवाद : वही है जिसने अनपढ़ लोगों में उन्हीं में से एक पैग़म्बर खड़ा किया जो उन्हें अल्लाह की आयतों को पढ़ पढ़ कर सुनाते हैं उनको पवित्र करते हैं उन्हें किताब और दानिशमंदी (बुद्धिमानी) की तालीम देते हैं हालांकि ये लोग पहले खुली गुमराही में थे।

यह अल्लाह की बड़ी नेअमत है कि उसने ऐसा रसूल भेजा जिसने नापाकों को पाक किया, जाहिलों को शिक्षित और नासमझों को बुद्धिमानी और राह भटके हुए लोगों को सीधी राह बताई, सो जो कोई यह आयत सुनकर फिर यह कहने लगे, कि पैगम्बर

की बात आलिमों के अतिरिक्त कोई नहीं समझ सकता और उनकी राह बुजुर्गों के अतिरिक्त कोई नहीं चल सकता, तो गोया उसने इस आयत का इनकार कर दिया और नेअमत की कद्र न की, बल्कि सच तो यह है कि जाहिल लोग उनका कलाम सुनकर आलिम हो जाते हैं और गुमराह लोग उनकी राह चलकर बुजुर्ग बन जाते हैं।

योग्य हकीम को अयोग्य समझना मूर्खता है : इस की मिसाल ऐसी है कि जैसे एक बड़ा हकीम हो और एक बहुत बीमार आदमी, फिर कोई उस बीमार आदमी को सलाह दे कि फुलाने हकीम के पास चले जाओ और उसका इलाज करो परन्तु वह बीमार यह जवाब दें कि उसके पास जाना और उससे इलाज करवाना बड़े बड़े तन्दरूस्त (स्वस्थ) लोगों का काम है मुझसे यह कहां हो सकता है, मैं सख्त बीमार हूं। तो ऐसा बीमार बड़ा नासमझ है और उस हकीम की हिकमत का इन्कार करता है, इस लिए कि हकीम तो बीमारों के ही इलाज हेतु होता है। जो हकीम तन्दुरूस्तों का इलाज करे और उन्हीं को उसकी दवा से फाइदा होता हो, और बीमारों को कुछ फाइदा न हो, तो वह हकीम किस काम का, मतलब यह हुआ कि जो कोई दीन से बहुत जाहिल है उसको अल्लाह व रसूल के कलाम को समझने में बहुत रगबत (रूचि) चाहिए और जो बहुत बे राह हो उसको अल्लाह व रसूल की राह चलने में जियादा कोशिश करना चाहिए, सो यह हर खास व आम को चाहिए कि अल्लाह व रसूल ही के कलाम की तहकीक करे और उसी को समझे, उसी पर चले, उसी के मुवाफिक अपने ईमान को ठीक करे।

ईमान के दो जुज हैं — यह बात हर एक को मालूम होना चाहिए, कि ईमान के दो जुज हैं —

१. खुदा को खुदा जानना

२. रसूल को रसूल समझना

खुदा को खुदा समझना इस प्रकार होता है कि किसी को उसका शरीक न समझे

रसूल को रसूल समझना इस प्रकार होता है कि उसके अतिरिक्त किसी और का तरीका तथा रास्ता न पकड़े।

इस पहली बात को तौहीद और दूसरी बात को इत्तिबाअे सुन्नत (नबी के जीवन का अनुपालन) कहते हैं। और इसके खिलाफ करने वाले को बिदअती। सो हर किसी को चाहिए कि तौहीद व इत्तिबाअे सुन्नत को खूब पकड़े और शिर्क व बिदअत से बहुत बचे, क्योंकि यह दोनों चीजें ईमान में खलल (बाधा) डालती हैं और बाकी गुनाह इनसे छोटे हैं कि वह केवल आमाल (कर्मों) में खलल डालते हैं।

पैरवी योग्य कौन है — जो व्यक्ति तौहीद व इत्तिबाअे सुन्नत पर अमल करने में पूर्ण हो, तथा शिर्क व बिदअत से बहुत दूर रहता हो और उसकी सुहबत (संगत) में रहने वाले लोगों को भी यह बातें हासिल हो जाती हों, अल्लाह व रसूल (ﷺ) की बातें समझने में उसी की पैरवी हर मुसलमान को करनी चाहिए तथा उसी को अपना पीर (धर्मगुरू) व उस्ताद मानना चाहिए।

अनुवादक :

यह सहीह है कि अल्लाह व रसूल का कलाम अरबी जबान में है और हर गैर अरब के लिए इतनी अरबी जबान सीख लेना जिस से वह अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) का कलाम समझ सके न आसान है न हर एक के लिए इसकी आसानियां हैं इसीलिए मौलाना ने फरमाया कि किसी आलिम की पैरवी करना पड़ेगी और उसकी पहचान भी बता दी। खूब याद रहे कि दीन की बातें सीखना समझना और उन पर अमल करना आसान है लेकिन अरबी जबान सीखना हर एक के लिए आसान नहीं है। उसके लिए बड़ी मेहनत और बहुत वकत चाहिए।

एक पत्र सम्पादक के नाम

आदरणीय सम्पादक महोदय,

सलाम मसनून !

महोदय, मुझे जेल नं० ५ के पते पर अब तक ५ अलग अलग महीनों की पत्रिकाएं प्राप्त हो चुकी हैं। मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूं।

हिन्दी मासिक सच्चाराही वास्तव में ज्ञान से भरी हुई होती है। एवं उसकी सरल भाषा इसकी खासियत है। इसके सभी लेख कुर्आन की शिक्षा से लेकर परामर्श तक अत्यन्त सराहनीय है। "सच्चा राही" पत्रिका ज्ञान वृद्धि का एक अच्छा साधन भी है। मुझे उम्मीद है आगे चलकर यह पत्रिका और भी निखरेगी । अल्लाह तआला से दुआ है कि अल्लाह तआला इस पत्रिका को सच्ची बात कहने एवं लोगों को कुर्आन व हदीस से परिचित कराने एवं सच्चे मालिक की पहचान बताने का एक साधन बनाए। एवं इस में कार्यरत सभी लोगों को अज्र से नवाजे (आमीन)।

वास्तविकता यह है कि मुझे यह पत्रिका पसन्द आई एवं आपको जान कर अवश्य आश्चर्य होगा कि किसी पत्रिका को मेरा यह पहला पत्र होगा। आशा है कि आप की तरफ से पाबन्दी से यह पत्रिका आगे भी मुझ तक पहुंचती रहेगी। सधन्यवाद। खैरख्वाह — मो० आकिल

समाज सुधार

मोबाइल फोन का करिश्मा

मोहम्मद हसन अंसारी

बड़े बाबू ,"सर ! आप को डी० एम० साहब ने बुलाया है।"

अधिकारी," आप ने क्या कहा?"

बड़े बाबू ,"सर ! मैं ने कहा साहब दौरे पर गये हैं, आते ही हाजिर होंगे।"

अधिकारी,"शाबाश ! बड़े बाबू !! मैं अपने घर पर हूं। थोड़ी देर में निकलता हूं। अपनी गाड़ी से निकल रहा हूं। चार सौ किलोमीटर का सफर है। सुबह तक पहुंच जाउंगा। और देखो डी० एम० के शिविर सहायक से बात कर लेना और फाइल तैयार रखना।"

बड़े बाबू ,"यस सर ! आप इतमीनान से आयें।"

(अधिकारी दूसरे दिन दस बजे दिन में जिलाधिकारी के निवास पर फाइल लिए हाजिर)

अधिकारी," सर ! शासन को जाने वाली सूचना लेकर आया हूं। सर कल सुबह का निकला रात दस बजे फील्ड से वापस आया हूं, रातभर जागकर सूचना संकलित करायी, सो यह हाजिर है। सर रात अधिक हो गयी थी, इसलिए आप को कष्ट देना मुनासिब नहीं समझा।"

जिलाधिकारी," वेरी गुड ! बी०एस०ए० साहब !! मेंड बन्दी और बन्धी बनाने का काम पूरा हो गया न। खुद देख लिया है। विश्व बैंक की टीम स्थलीय निरीक्षण करेगी, अगले सप्ताह यह सूचना आज लखनउ शासन को चली जाये। और आज ही प्रमुख सचिव को उन के आवास पर उपलब्ध करा दी जाये। बुन्देलखण्ड का मामला है, चित्रकूट उसका हृदय, देखो श्रीवास्तव जी ! आप तो अवध के हैं, बुन्देलखण्ड की नाक रखनी है। समझे !!"

(अधिकारी फाइल लिये बाहर निकलता है और गाड़ी में बैठकर अपने दफ्तर पहुंचता है)

बड़े बाबू,"सर ! आपने याद किया है।"

अधिकारी," निरीक्षक ए० बी० सिंह को बुलाओ"""" देखिये सिंह साहब! आप के क्षेत्र में विश्व बैंक की टीम स्थलीय निरीक्षण के लिए अगले सप्ताह आ रही है। बुन्देलखण्ड की नाक रखानी है। बढ़िया मुआइना होना चाहिए। बन्धी वगैरह देख लेना, ठेकेदार से कहो तीन दिन के अन्दर गत छः माह में जितना काम हुआ है उसकी रीटचिंग करादें आप क्षेत्र मे ही रहें, मुझे प्रोग्रेस बताते रहें, मेरा मोबाइल न० बड़े बाबू से ले लें। और बड़े बाबू ! यह सूचना आज ही लखनउ भेजवायें, प्रमुख सचिव जी को उन के आवास पर उपलब्ध करा दी जाये। कल उनकी विश्व बैंक की टीम के साथ बैठक है। और हां ! अगले सप्ताह मंगल को विश्व बैंक की टीम के लिए डाक बंगला आरक्षित करा लें दो दिन के लिए और सारी व्यवस्था समय से चुस्त दुरूस्त कर लें। टीम के लिए दो बोलेरो गाड़ी बुक करालें बोलेरो मिले या टोयोटा, दो दिन के लिए। ठेकेदार से अनुमानित खर्च ले लें बाद में भुगतान के समय हिसाब कर लेना। मैं आज ही घर जा रहा हुं। कल बच्चों को लेकर परिवार के साथ वैष्णो देवी के दर्शन करने कश्मीर जाना है। मुआइने की पूर्व संध्या पर वापसी होगी। मोबाइल पर सम्पर्क रखें, और प्रगति से मुझे प्रतिदिन अवगत कराते रहें समझे !!! तो मैं चलता हूं साढ़े तीन सौ कि०मी० का सफ़र है। चार पांच घंटे तो लग ही जायेंगे। ड्राइवर ! चलो। टंकी फुल करा लिया है न। और हां बड़े बाबू ! कैश चेस्ट से पचीस हजार लेते आओ। लक्ष्मी तो रही जा रही है। जल्दी करो।

(अधिकारी अपने परिवार के साथ्स वैष्णव देवी जाते हुए, बर्फ बारी और हिमपात के कारण रास्ता बन्द हो जाने से, काफिले के साथ फंसा हुआ। अचानक मोबाइल फोन की घंटी बज उठती है।)

अधिकारी,"हेलो ! बड़े बाबू !! क्या हाल है? सारी तैयारी करा ली है न।"

बड़े बाबू,"जी सर सब कुछ ठीक कर लिया है। सर आप कब आ रहे हैं, निरीक्षण के समय आप मौजूद रहें बस! हम और सिंह साहब सब कुछ देख लेंगे। आप निश्चिन्त होकर वैश्णव देवी के दर्शन करें। मुझे भी याद रखें।

अधिकारी," लेकिन बड़े बाबू ! यहां तो भयंकर हिमपात हुआ है, मार्ग अवरूद्ध हो गया है। रास्ता बन्द है। सारे तीर्थयात्री फंस कर रह गये हैं। कितना समय लग जाये यहां से आगे बढ़ने में कुछ कहा नहीं जा सकता है। देखो बड़े बाबू ! अगर मैं निरिक्षण की पूर्व संध्या पर न पहुंच पाऊं तो रात ही में सी. डी. ओ. साहब से उनके आवास पर मिल लेना, एक लाख लेते जाना। सारी बात साफ–साफ बता देना। देखो बड़े बाबू ! दायी से पेट नहीं छुपाया जाता, ठीक है न। और साहब से कहना, सर ! बुन्देलखण्ड की नाक रखनी है।

मुआइना तो होना है, साहब बाहर हैं अगर वह नहीं भी रहेंगे तो हम लोग मुआइना करा देंगे। दो टोयोटा बुक करा लिया है, टीम के खाने पीने का बढ़िया इन्तेजाम कर लिया है।"

सी. डी. ओ. साहब, "लेकिन बड़े बाबू ! अधिकारी का रहना तो जरूरी है। वह लोग क्या पूछ लें, कौन बतायेगा, अभी मैं भी उस क्षेत्र में नहीं पहुंच पाया हूं। आप तो जानते हैं मूझे अभी महीने भर आये हुए हुआ १ महीने में दो तीन बार तो लखनऊ बैठक में जाना पड़ा। फिर परिवार भी वहीं है। अपने साहब को जैसे भी हो बुलाओ, उनका होना जरूरी है। उनसे कहो नौकरी करना है या नहीं।"

बड़े बाबू , " सर ! साहब ने बच्चों के लिए यह मिठाई का डिब्बा भेजा है आज आप का चपरासी मुन्ना लखनऊ जा रहा है इसे बच्चों को भेजवा दें, आज आप नहीं जा पायेंगे, कल विश्व बैंक की टीम जो आ रही है। बच्चे लखनऊ में आप की प्रतीक्षा में होंगे। सर ! इसे देख लें। सवीकार करें। और सर ! यदि किसी कारणवश हमारे साहब रातों रात न पहुंच पाये तो आप मुझे इजाज़त दें कि मेरे यहां के निरीक्षक ए. बी. सिहं साहब को मैं बी. एस. ए. साहब के रूप में प्रस्तुत कर के मुआइना करा दूं ! उन्हीं का क्षेत्र है। मुआइना बढ़िया होगा सर ! आप इतमीनान रखें।"

सी. डी. ओ. साहब, " ठीक है, बड़े बाबू ! रात अधिक हो गई है, इजाज़त है, जायें। और देखें कि विश्व बैंक की टीम सैटिस्फाई होकर ज़ाये, खाना पीना बढ़िया हो, मैं साथ रहूंगा, बाक़ी तुम देखना।

(मोबाइल फोन की घंटी बजती है)

अधिकारी, " कौन ! बड़े बाबू हम लोग अभी तक वैष्णव देवी को जाने वाले अवरूद्ध मार्ग पर फंसे पड़े है, कल मुआइना है, कैसे होगा !! हे भगवान ! लगता है नौकरी जाती है !! क्या करूं !!!!

बड़े बाबू , " सर आप चिन्ता न करें। मैने सी० डी० ओ० साहब से बात कर लिया है, अभी उन्हें मिठाई का डिब्बा और एक लाख घर पर देकर आ रहा हूं। कल टीम आयेगी। मुआइना होगा आप के रूप में निरीक्षक ए० बी० सिंह प्रस्तुत होंगे। आप इतमीनान से वैष्णो देवी के दर्शन कर के आयें। यहां की चिन्ता न करें।" अधिकारी, "वाह बड़े बाबू जी ! मान गया आप को !! वाह वाह पंडित जी ! खूब सोचा। वेरी गुड !! अच्छा कल बात करेंगे इसी समय !!! "

●●●

Mohd. Aslam
(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons

Jwellers

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Deals :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Deals in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow- 2260063

आपके प्रश्नो के उत्तर

इदारा

प्रश्न : क्या नफ़्ल नमाज़ें बैठ कर पढ़ी जा सकती हैं?

उत्तर : नमाज़ में खड़े होना फ़र्ज़ है, बिना उज़्र के बैठ कर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ न होगी अल्बत्ता नफ़्ल नमाज़ में इस की गुंजाइश है कि वह बैठ कर अदा की जा सकती है लेकिन यह याद रहे कि बैठ कर नमाज़ पढ़ने से आधा सवाब मिलेगा लिहाज़ा पूरा सवाब चाहते हैं तो नफ़्ल भी खड़े होकर अदा करें।

प्रश्न : रोज़ा रखने में जो भूखा प्यासा रहना पड़ता है इस तकलीफ़ में क्या मस्लहत (उद्देश्य) है।

उत्तर : पहली बात और सबसे अहम (महत्वपूर्ण) बात यह है कि अल्लाह का हुक्म है। उसके बाद ध्यान दें तो इसमें अनगिनत फ़ाइदे हैं। बड़ा फ़ाइदा यह है कि भूखों का हाल मालूम होता है और उनके लिए हमदर्दी (सहानुभूति) पैदा होती है। (जिस के पांव न जाए बिवाई+क्या जाने वह पीर पराई) रोज़े से नफ़्स की धुलाई होती है जिसे अरबी में तज़्किया कहते हैं सहीह तौर पर रोज़ा पूरा किया जाए तो रूहानी सफ़ाई (आत्म स्वच्छता) का एहसास होता है। इफ़्तारी में जो लज़्ज़त मिलती है वह बयान में नहीं आ सकती।

हमारे एक हिन्दू दोस्त रोज़ा सिर्फ़ इस लिए रखते थे ताकि इफ़्तारी की लज़्ज़त लें। क़ुर्आन ने खुद कहा है कि रोज़े से तक़्वा (संयम) पैदा होता है। गरज़ कि रोज़े में बे शुमार फ़ाइदे हैं। उनमें से बहुत से फ़ाइदों का अल्लाह की तरफ़ से वअ़दा है जो आख़िरत में मिलेंगे और बहुत से इस दुन्या में भी महसूस होते हैं जिन को सहीह तौर पर रोज़ा रखने वाला ही महसूस कर सकता है। ख़ुदा न ख़्वास्ता जो लोग भूख प्यास की तकलीफ़ से डर कर रोज़ा नहीं रखते वह किसी दीन्दार की निगरानी में रोज़ा रख कर तो देखें।

प्रश्न : मेरे पास एक प्लाट है और उस पर मकान बनवाने के लिए कोई रास्ता नही मेरे पांच बच्चे और दो बच्चियां हैं हुकूमत लोन दे रही है साठ हजार दे कर अस्सी हजार वसूल करेगी तो क्या मैं लोन लेकर मकान बनवा लूं यह मेरे लिए जायज है। या नहीं?

उत्तर : जिस तरह 'सूद' का लेना मना है और हराम है उसी तरह सूद का देना भी हराम है हुकूमत जो बीस हजार जियादा ले रही है इसलिए यह मुआमला शरअी तौर पर नाजाइज है।

प्रश्न : सऊदिया से मैं जब आया तो एक साहब के पास रू०रख आया था कि जब वापस आऊंगा तो ले लूंगा दो बारह जब मैं गया तो उसने बताया कि चोरी हो गयी तो क्या अब वह रकम में उससे ले सकता हूं या नहीं?

उत्तर : अमानत की रकम अगर उसने वैसे ही हिफाजत से रखी और उसकी हिफात में गफलत नहीं की थी तो उसके जिम्मे उस रकम का अदा करना लाजिम नहीं लेकिन अगर उसने अमानत की रकम वैसे ही महफूज नहीं रखी बल्कि उसे खर्च कर लिया या अपनी रकम में इस तरह मिला लिया कि दोनों के दरमियान शनाख्त न रही, उसकी हिफाजत में गफ़लत की, तो अदा करना जरूरी है।

प्रश्न : मैं एक दफतर में नौकरी करता हूं हमारे यहां ऐसा होता है कि अगर कोई शख्स अपनी फाइल देखने आता है कि मेरी फुलां फाइल है वह निकल जाए या मेरा फाइल नम्बर यह है अगर दिखा दे तो बहुत मेहरबानी होगी। हमारे सीनियर कलर्क इन बातों को पूरा कर देते हैं । वह साहब सीनियर साहब को कुछ रकम दे देते हैं हमारे सीनियर साहब उसमें से हमें भी देते हैं पूछना यह है कि यह रिश्वत तो न होगी और अगर होगी तो उसकी जिम्मेदारी हमारे सीनियर कलर्क पर आएगी या हम पर? अगर इस मसअले का हल बता दें तो बड़ी मेहरबानी होगी।

उत्तर : फाइल निकालने दिखाने और टाइप करने की अगर सरकारी उजरत तय है तो इस उजरत का वसूल करना सही है और इसका मसरफ वह है जो कानून में मुकर्रर किया गया हो। अगर सरकारी तौर पर उजरत मुकर्रर नही है तो कुछ लेना रिश्वत है और गुनाह में वह सब शरीक होंगे, जिन–जिन का इसमें हिस्सा होगा।

औरतों पर ना महरम मर्दों से पर्दा फर्ज है। मर्दों पर ना महरम औरतों को बे पर्दा देखना हराम है।

ख़ुशियों का त्योहार

अबू मर्ग़ूब

त्योहार मनाना इन्सान की फ़ितरत (प्रकृति) है। इस्लाम आने से पहले लोग त्योहार मनाते रहे हैं। हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मक्का छोड़ कर मदीना आये तो उनको मदीने के लोगों ने बताया कि वह साल के दो दिनों में खुशी मनाया करते हैं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अल्लाह ने तुम को इन दो दिनों से अच्छे दो दिन ख़ुशी मनाने के लिए दिये हैं, उनमें से एक दिन रमज़ान के रोज़े पूरे कर लेने पर पहली शव्वाल को जिसे अ़ीदुलफ़ित्र कहते हैं दूसरा १० ज़िल्हिज्जा को क़ुर्बानी की अ़ीद का दिन।

ख़ुशी में इन्सान ऐसे काम करना चाहता है जो उसको अच्छे लगें उसके नफ़्स (मन) को मज़ा आये जैसे अच्छा पहनना, अच्छा खाना, खेल कूद करना, नाचना गाना आदि लेकिन इस्लाम ने ख़ुशी मनाने के भी हुदूद (सीमाएं) मुक़र्रर कर दिये हैं और ऐसे कामों की इजाज़त नहीं दी जिस में इन्सान ख़ुदा को भूल बैठे बल्कि ऐसे कामों से ख़ुशी मनाने की इजाज़त दी जिस से दिल भी ख़ुश हो और अपने पैदा करने वाले की याद भी बाक़ी रहे।

चुनांचि अ़ीद के दिन बहुत सवेरे उठना, फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर नहाना धोना, मिस्वाक करना, अच्छे अच्छे कपड़े पहनना, ख़ुश्बू लगाना, फिर कुछ मीठी चीजें खाना यह सब चीज़ें मन को भाती हैं यह सारे काम अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत हैं मुसलमानों को चाहिए कि इन पर अ़मल कर के ख़ुशी भी हासिल करें और सुन्नतों का सवाब भी लें।

ख़ुशी अकेले कभी नहीं भाती, ख़ुशी का लुत्फ़ (आनन्द) दूसरों की मौजूदगी ही में होता है, मां, बाप, भाई, बहनें, दादा, दादी, यह सब एक साथ हों तो ख़ुशी का क्या कहना! इज्तिमाअ़ी ख़ुशी के इज़्हार के लिए ख़ुदा ने बहुत अच्छा इन्तिज़ाम किया और अ़ीद की नमाज़ वाजिब (अनिवार्य) की, जो बड़ी जमाअ़त से पढ़ी जाती है और कोई मजबूरी न हो तो बस्ती से बाहर निकल कर पढ़ी जाती है जिसमें इ़बादत के साथ बड़ा लुत्फ़ भी आता है।

जब साल में दो दिन ख़ुशियों के लिए अ़ता (प्रदान) हुए तो ग़रीबों की ख़ुशी का भी ख़याल रखा गया और मालदारों पर वाजिब हुआ कि वह अपनी तरफ़ से और अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ़ से फ़ित्रा निकाल कर अपने ग़रीब भाइयों को पेश (प्रस्तुत) करें ताकि वह भी अ़ीद की खुशी का आनन्द ले सकें।

फ़ित्रा या सदक़–ए–फ़ित्र अगर वह सब लोग निकालें जिन पर वाजिब है और अपने ग़रीब भाइयों को पहुंचा दें तो कोई ग़रीब अ़ीद के दिन अपनी ग़ुर्बत के सबब अ़ीद की ख़ुशी से महरूम (वंचित) न रहे।

हर मालदार यानी साहिबे निसाब पर ज़कात फ़र्ज़ है। और सदक़–ए–फ़ित्र वाजिब। ज़कात तो माल पर साल गुज़र जाने पर फ़र्ज़ होती है जब कि सदक़–ए–फ़ित्र अ़ीद के रोज़ माल मौजूद होने पर वाजिब होता है। हर मालदार अपनी तरफ़ से और अपनी नाबालिग़ औलाद की तरफ से हर एक की तरफ़ १६०० ग्राम गेहू या ३२०० ग्राम जो या उन की क़ीमत निकाल कर सवेरे सवेरे अ़ीदगाह जाने से पहले ही अपने ग़रीब भाई को पहुंचा दें तो वह ग़रीब कैसा ख़ुश होगा फिर आप यह भी कर सकते हैं कि सदक़–ए–फ़ित्र की क़ीमत सदक़ा बताए बिना अपने ग़रीब भाई के बच्चों को अ़ीदी के तौर पर दे सकते हैं। आप अपने अ़ज़ीज़ों (सम्बन्धियों) और पड़ोसियों मे चुपके से पता लगायें और सदक़–ए–फ़ित्र अ़ीद से दो तीन रोज़ पहले ही पहुंचा दें तो आप का सदक़ा अदा हो जाए गा और हो सकता है आप का ग़रीब भाई उन पैसों से अ़ीद की ज़रूरियात मुहैया करे। बहर हाल अ़ीद ख़ुशी का दिन है इस रोज़ अपनी ख़ुशी के साथ अपने ग़रीब भाइयों को भी ख़ुश करें और ख़ुशी में हद से निकल कर गुनाहों में न जा फंसें।

(पृष्ठ ३५ का शेष)

तो उनसे कहा कौन अल्लाह की ओर बढ़ने में मेरा सहायक होता है? हवारियों ने कहा हम अल्लाह के सहायक हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए। और गवाह रहिये कि हम मुस्लिम हैं ऐ हमारे रब तूने जो कुछ उतारा है हम उस पर ईमान लाये और इस रसूल की पैरवी की ऐ अल्लाह तू हमें गवाही देने वालों में लिख ले।

बच्चों में निमोनिया

डॉ० मुहम्मद असलम

बच्चों में सांस, सीने की बीमारियां अधिकाधिक घातक हो सकती हैं। संसार में हर साल चालीस लाख बच्चे इस प्रकार की बीमारियों से ग्रस्त होकर अपनी जान से गुजर जाते हैं जिनकी अक्सरियत का सम्बन्ध निर्धन ऐशियाई उन्नतिशील दुन्या से है। उनमें ७५ प्रतिशत मरीज निमोनिया के होते हैं।

निमोनिया अधिकतर कीटाणुओं से होता है जिसका इलाज ऐंटी बाइटिक है दवाओं से हो सकता है। यदि समय पर इस बीमारी की पहचान हो जाये तो बहुत से मरीज मौत के मुंह से बच सकते हैं। यह बात याद रखने की है कि इस रोग की पहचान के लिए खून की जांच, एक्सरे और सीने के आले की जांच आवश्यक नहीं बल्कि होशियार मां बाप इस रोग को पहचान सकते हैं बशर्ते कि वह इस रोग की प्रारम्भिक जानकारी रखते हों। जैसे सांस लेने की गति तेज हो जाती है, उसके अतिरिक्त पस्लियों के बीच मांसपेशियां खिंची हुई मालूम होती हैं जो सांस को अन्दर लेने की कोशिश है क्योंकि इस बीमारी से ग्रस्त फेफड़े में सांस कठिनाई से जाती है और पसलियां नीचे ऊपर होती हैं। उपरोक्त दोनों दशाओं को देख कर मां या कोई भी स्वास्थ कर्मचारी यह अनुमान लगा सकता है कि बच्चे को निमोनिया है और फिर उसी समय इलाज शुरू किया जा सकता है। यदि इस जानकारी को आम (सार्वजनिक) किए जाए और इस रोग के उपचार के लिए एक सस्ती दवा उपलब्ध हो सके तो इस बीमारी का सफल इलाज हो सकेगा।

यह बात दिलचस्पी से पढ़ी जाएगी कि विकासशील देशों के जिन स्थानों पर जनसाधारण में स्वास्थ की जानकारी, बच्चों की देखरेख में बेहतरी और बीमारियों के रोकने में टीकों का प्रबन्ध किया गया है, वहां बच्चों का स्वास्थ प्रत्यक्ष रूप से अच्छा रहा और उनकी मृत्युदर में काफी कमी आगई। आवश्यकता है कि इस कार्यक्रम को हर जगह चलाया जाए।

जानकारी के लिए बच्चों की स्वाभाविक सांस की रफतार अंकित की जा रही है–

२ माह से कम उम्र के बच्चों में – ६० सांस प्रति मिनट

२ माह से बारह माह के बच्चों में – ५० सांस प्रति मिनट

एक वर्ष से अधिक उम्र के बचों में – ४० सांस प्रति मिनट

जिन बच्चों में अपनी उम्र के अनुसार सांस की गति अधिक है उन्हें सम्भवतः निमोनिया है और उन्हें इलाज की आवश्यकता है। कभी कभी बीमारी की गम्भीरता के अनुसार हस्पताल में दाखिल करके उपचार की आवश्यकता पड़ सकती है। दो माह से कम उम्र के बच्चों में निमोनिया का दौरा गम्भीर और बहुदा घातक हो सकता है। अतः इन बच्चों में तत्पर्ता से इलाज की जरूरत होती है।

जिन बच्चों को केवल नजला जुकाम खांसी होती हैं उन्हें एंटी बाइटिक दवाओं की आवश्यकता नहीं होती है। उन्हें केवल सामान्य आहार और कम गर्म पेय पदार्थ दें ताकि गले को आराम मिले लेकिन साथ साथ यह देखते रहें कि निमोनिया का लक्षण तो नहीं दिखाई दे रहा है। चुनानचः छोटे बच्चों में सांस की रफ़तार को महत्व दिए जाए। अगर वह बीमार हों तो सांस की नियमित रूप से गिनती की जाए और जब अधिक गति से चलती हो तो फिर तुरंत डाक्टर की सलाह ली जाए।

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees & Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

बग़दाद शहर की बुन्याद

लेखक– डॉ० मो० रफी

सन् ७४७ ई० में उमवी खिलाफत को समाप्त करके अब्बासी खिलाफत की नीव डाली गयी थी। वास्तव में अब्बासियों का साम्राज्य उतना विस्तृत न था जितना उमैया खलीफाओं ने विस्तार किया था। इनके हाथ से उत्तरी अफ्रीका तथा स्पेन का पूरा क्षेत्र निकल चुका था जिस पर वे कभी–भी अपना अधिकार न स्थापित कर सके। फिर भी अब्बासी खलीफाओं ने पूर्वी जगत पर १२४८ ई० तक लगभग ५०० वर्षों तक शासन किया।

अब्बासी खिलाफत के संस्थापक अबुल अब्बास अल सफ्फाह ने अपनी खिलाफत की स्थापना के समय कूफा नगर में एक महल का निर्माण कराया था जिसका नाम हाशमिया रखा, परन्तु कूफा नगर सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त स्थान न था। इसमें समय–समय पर वाह्य आक्रमण होते रहते थे। इसी समस्या को दृष्टिगत रखते हुए खलीफा अल–मन्सूर ने जिनको अब्बासी खिलाफत का वास्तविक संस्थापक माना जाता है, उपयुक्त स्थान की खोज हेतु अपने खिलाफत के योग्य तथा अनुभवी लोगों को भेजा। अन्त में कुछ लोगों ने काफी परिश्रम के बाद एक स्थान का चुनाव किया जो प्रत्येक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण स्थान था। कुछ समय पश्चात खलीफा मन्सूर ने स्वयं जाकर उसका निरीक्षण किया तथा उसे अपनी राजधानी बनाने हेतु विचार विमर्श किया काफी सोच–विचार के बाद उस स्थान का नाम बगदाद रखा गया। मंसूर के युग की सबसे महत्वपूर्ण घटना बगदाद का पुनरनिर्माण था, उसने यह कार्य ७६२ ई० में करवाना प्रारम्भ किया। बगदाद नगर को पुनरनिर्मित करने से पूर्व कए योजना बनायी गयी और इस योजना के अनुसार ही बग़दाद नगर का निर्गाण किया गया।

नगर की सीमा निर्धारित करने हेतु रस्सी पर कपड़ा लपेट करउसे तेल में भिगोकर एक बड़े वृत्ताकार रूप में फैला दिया गया। इसके बाद इसमें आग लगा दी गयी। रस्सी के जलने से पृथ्वी पर दाग पड़ गये। यही नगर की सीमा निर्धारित की गयी। मन्सूर के बगदाद की नींव दजला नदी के पश्चिमी किनारे पर थी और उसके पूर्वी किनारे पर बगदाद का दूसरा भाग और उत्तराधिकारी खलीफा मेंहदी के नाम से मेंहदिया नगर बसा। बगदाद शब्द दो शब्दों बग और दाद से मिलकर बना है जिसका अर्थ क्रमशः खुदा और दिया हुआ। बगदाद का दूसरा नाम दारुस्सलाम या मदीनतुस्सलाम भी था।

बगदाद नगर वृत्ताकार था, इसलिए इसे गोलनगर भी कहा गया है। इस नगर के चारों ओर ईंटों की दोहरी दीवार थी। उसके पश्चात् एक गहरी खाई तथा उसके बाद एक ६० फिट ऊंची भीतरी दीवार थी जो केन्द्रीय भाग को घेरे हुए थी। इस गोल नगर के चार प्रमुख द्वार के बीच में चार सड़कें थीं, जो साम्राज्य के चारों ओर को जाती थीं। शहर के बीच में खलीफा का प्रासाद था, जो स्वर्ण द्वार या हरा गुम्बद कहलाता था। यह भूमि से १३० फिट ऊंचा था। इसी गुम्बद के ऊपर एक व्यक्ति की प्रतिमा थी जो हाथ में बर्छी लिए खड़ी थी।

समय के परिवर्तन के साथ–साथ बगदाद नगर में अनेकों मस्जिदों तथा महलों का निर्माण किया गया। यह नगर राज्य के महान नगरों में से एक था। यह नगर गोलाकार था। इसके चारों ओर बड़ी–बड़ी सड़कों का निर्माण किया गया था।

नगर की सीमा के बाहर एक खाई थी जो सदैव जल से भरी रहती थी। दूसरी फसील के अन्दर जाने के लिए राजकीय महलों के चारों ओर एक तीसरी दीवार थी। इस दीवार की ऊंचाई ५० फिट थी। दूसरी बाहरी फसील के एक भाग निर्माण एक ही नाप की ईंटों से हुआ था जिस में कच्ची ईंटों का प्रयोग किया गया था नगर की शहरी फसील की ऊंचाई ६० फिट थी और नींव ७५ फिट चौड़ी थी, जो ऊपर जाकर मात्र ३० फिट चौड़ी रह गयी थी। फसील की लम्बाई १०,००० गज थी। दीवार के बराबर–बराबर दूरी पर चार फाटक बनाये गये थे जिनमें से प्रत्येक के मध्य २५००–२५०० गज का फासला था। इन फाटकों को विभिन्न नामों से पुकारा जाता था। दक्षिण पूर्वी फाटक बाबुल बसरा कहलाता था। दक्षिणी पश्चिमी फाटक बाबुर कूफा कहलाता था। उत्तरी फाटक को बाबुल खुरासान कहा जाता था। उत्तरी–पश्चिमी फाटक बाबुल

शाम से सम्बोधित किया जाता था।

ऐसा कहा जाता है कि बगदाद नगर के निर्माण में एक लाख से अधिक कारीगरों एवं मजदूरों ने काम किया। यह कारीगर तथा मजदूर राज्य के विभिन्न स्थानों से लाये गये थे। इमाम अबू हनीफा ने भी इसके निर्माणकार्य में योगदान दिया था। उन्होंने ईंटों को नापकर उसकी संख्या ज्ञात करने की विधि निकाली थी। बगदाद नगर का निर्माण ७६६ ई० में पूरा हो चुका था। इस नयी राजधानी को इस प्रकार बनाया गया था कि चारों दिशाओं में विशेष पूर्ण विचार धाराओं का संगम था। इसी कारण से अरबी संस्कृति में ईरानी संस्कृति का मिश्रण हो सका।

प्रो० हिट्टी ने बगदाद के विषय में इस प्रकार वर्णन किया है "केवल दो ही क्षेत्र ऐसे थे जिन पर अरबों का प्रभाव शेष रहा। उनमें से एक इस्लाम जो अभी तक राज्य धर्म था और दूसरी अरबी भाषा, जिसमें अभी तक सरकारी कार्यालयों में काम होता था।

खलीफा हारून अल–रशीद के युग में बगदाद का वैभव अपने उच्च सीमा तक पहुंच गया था। इसी खलीफा के काल में बगदाद शहर एक साधारण अवस्था से बढ़कर अपार धनराशि का विश्व केन्द्र तथा अन्तर्राष्ट्री महत्व का बन गया।

क़ुर्आन शरीफ़ समझ कर तदब्बुर के साथ पढ़ना चाहिए लेकिन बे समझे पढ़ने में भी बड़ा सवाब है। इस लिए तिलावत में कोताही न करें।

हम्द बारी तआला

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी

सारे बन्दे तेरे तू है सबका इलाह
सब रिआया तेरी सब का तू बादशाह
सब पे रखता है हर दम करम की निगाह
सब का वाली है तू सब को तेरी पनाह
या इलाही तेरा मुतआली है नाम
पाक तेरी सिफत पाक तेरा कलाम

मेरे अल्लाह तू सब का माबूद है
जिन्नो इन्सो मलक का तू मस्जूद है
सब का मतलूब है सब का मक़्सूद है
जो है निअ़मत तेरी ग़ैर महदूद है
बर्र व तव्वाब और मुन्तकिम तेरे नाम
पाक तेरी सिफत पाक तेरा कलाम

तू अफुव्वो रऊफो हमीदुल खिसाल
मालिकुलमुल्क तू तुझ को सब का खयाल
तेरे शर्क़ और ग़र्बो जुनूबो शिमाल
तू है रब्बुस्समावात ऐ जुलजलाले
तेरा इकराम है हर नफ्स सुब्हो शाम
पाक तेरी सिफत पाक तेरा कलाम

नाम मुक्सित तेरा और जामेअ़ है तू
तू गनी और मुग्नी है मानिअ़ है तू
तू है मुअ़ती हर इक गम का दाफिअ़ है तू
तू है मुख्तारे कुल जारो नाफिअ है तू
दोनों आलम का करता है तू इन्तिजाम
पाक तेरी सिफत पाक तेरा कलाम

नूर है तू तुझी से जहानों का नूर
तू जमीनों का नूर आसमानो का नूर
तू मकीनों का नूर और मकानों का नूर
मिहरो माहो नुजूम और जमानों का नूर
तुझ को कहते हैं हादी सभी खास व आम
पाक तेरी सिफत पाक तेरा कलाम

तू बदी उस्समावातो रब्बुल उला
नाम बाकी तेरा तुझ को हासिल बका
तेरा वारिस है नाम सारा आलम तेरा
तू रशीदो सबूर ऐ हमारे खुदा
तेरी तस्बीह पढ़ते हैं हम सुब्हो शाम
पाक तेरी सिफ़त पाक तेरा कलाम

हम्द तेरी खुदा ख़त्म करते हैं हम
बा दिले मुजतरिब और बा चश्मेनम
अ़र्ज़ करते हैं हम खा के तेरी क़सम
हम्द गर हम करें उम्र भर दम्बदम
जिन्दगी हो तमाम हम्द हो ना तमाम
पाक तेरी सिफत पाक तेरा कलाम

मगरूर क्यों है इतना
नादान होश में आ
कर ले यकीन दिल से
तू खाक का है पुत्ला
यह हाथ पांव तेरे
तिनके का हैं सहारा
देता है रिज़्क़ तुझको
परवरदिगार तेरा
कर बन्दगी खुदा की
बन्दा है तू खुदा का

कारून को धंसा कर
फिरऔन को डुबाकर
कुर्आन में है आया
इन्सा ज़रा नज़र कर
नमरूद सा सितम्गर
मारे है उसको मच्छर
हर लम्हा खैर अपनी
अल्लाह से तलब कर
कर बन्दगी खुदा की
बनदा है तू खुदा का

ईसा अ० की विलादत

आसिफ अन्जार नदवी

ईसा अ० का जन्म अकीदों उनका जीवन उनका ईश्वरीय मिशन ये सब कुछ महसूस चीजों के खिलाफ एक चैलेन्ज था उनके जीवन ने यहूदियों के दरमियान राइज तमाम ईमानी अकीदों को हिला कर रख दिया उनकी बिलादत ऐसे तरीके से हुई जो प्राकृतिक नियमों के खिलाफ था। उन्होंने गोद में ही लोगों से बात चीत की उनकी परवरिश एक सन्यासन और फकीर मां की गोद में हुई उनकी जिन्दगी लानतो मलामत से भरे माहौल में गुजरी जहां न कोई महानता थी न मालदारी वो फकीरों के साथ बैठते, उनको खिलाते–पिलाते उन पर दया करते निर्धनों और निर्बलों के साथ बराबरी से पेश आते उनके नजदीक धनवान और निर्धन राजा प्रजा शरीफ और रज़ील में कोई फर्क न था।

ईसा अ० के मुअजिजात

ईश्वर ने उनको नबूवत देकर और उनकी ओर वही भेजकर उनका मान और सम्मान बढ़ाया उनको इंजील दी और हैरत अंगेज मुअजिज़ात के माध्यम से उनकी सहायता की अल्लाह ने उनके जरिये ऐसे रोगियों को अच्छा कर दिया जिनका इलाज करने से बड़े–बड़े वैध हाथ जोड़ चुके थे मगर अल्लाह ने उनके जरिये उन रोगियों को अच्छा कर दिया वह अल्लाह के हुक्म से मुर्दों को जीवित कर देते लोगों के सामने मिट्टी से परिन्दे की सूरत बनाते और उसमें फूंक मारते तो वह अल्लाह के हुक्म से पक्षी बन जाता लोगों को बता देते कि उसने क्या खाया है और क्या घर में छोड़ा है हजरत ईसा अ० के तमाम मुअजिज़ात ईश्वरीय शक्ति का इन्कार करते थे वो उसकी मुखालिफत में उठ खड़े हुए और उन्होंने यह तय कर लिया कि जो कुछ वह जानते हैं उसमें बढ़ोत्तरी न करेंगें।

दीन की तरफ बुलावा और यहूदियों का झुठलाना

यहूदियों ने उन तमाम चीजों में हजरत ईसा अ० को झुठलाने की कोशिश की जो उन्होंने अपनी सोच से पैदा कर ली थी अल्लाह की हलाल की हुई चीजों को हराम कर लिया था ईसा अ० उनको असल दीन की तरफ और उसकी हक़ीक़त की तरफ बुलाते और अल्लाह की ऐसी महब्बत की तरफ बुलाते जो तमाम महब्बतों पर गालिब हैं मानवता पर दया और उसके एहतराम की तरफ बुलाते फकीरों और गरीबों को बराबर अल्लाह की तरफ बुलाते और उनको शुद्ध तौहीद की तरफ बुलाते अम्बिया अ० के दीन में जो जाहिली आदत और आसथा दाखिल हो गई थी उसका इन्कार करते।

यहूदियों ने ईसा अ० के खिलाफ जंग छेड़ दी

यह तमाम चीजें यहूदियों पर बड़ी सख्त थीं। उन्होंने उनके खिलाफ यक जबान होकर जंग का बिगुल बजा दिया, उन पर इल्ज़ामों और तोहमतों की बारिश होने लगी उन को बुरी–बुरी गालियां दी जाने लगीं उनकी संसार तियागी मां पर बदचलनी का इल्जाम लगाया उनको सताया जाता अवबाशों के जरिये पीछा किया जाता उनके रास्ते रोके जाते।

कुरआन में ईसा अ० का किस्सा

फिर यहूदियों ने ईसा अ० को जान से मारने का इरादा कर लिया लेकिन अल्लाह तआला ने उनकी मदद की और उनकी साज़िश को उनही पर पलट दिया उनको आसमान पर अपने पास बुला लिया। कुरआन में ये किस्सा इस तरह आया है और याद करो जब फरिश्तों ने कहा, "ऐ मरयम अल्लाह तुझे अपने एक कलमे (बात) की शुभ–सूचना देता है। जिसका नाम मसीह, मरयम का बेटा, ईसा होगा, वह दुनिया और आखिरत में आबरूवाला होगा और अल्लाह के निकटवर्ती लोगों में से होगा। वह बोली "मेरे रब। मेरे यहां लड़का कहां से होगा, जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नही? कहा – "ऐसा ही होगा, अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है। जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है तो उसको बस यही कहता है "हो जा" तो वह हो जाता है। और उसको किताब हिकमत तौरात और इंजील का ज्ञान देगा। और उसे इसराईल की संतान की ओर रसूल बनाकर भेजेगा। (वह कहेगा) कि "मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूं। कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी के रूप, जैसी आकृति बनाता हूं, फिर उसमें फूंक मारता हूं, तो वह अल्लाह के आदेश से

उड़ने लगती है। और मैं अल्लाह के आदेश से अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देता हूं। और मैं तुम्हें बता देता हूं जो तुम खाते हो और जो कुछ अपने घरों में इकट्ठा करके रखते हो निस्संदेह इसमें तुम्हारे लिए एक निशानी है। यदि तुम मानने वाले हो। और मैं तौरात की, जो मेरे आगे हैं, पुष्टि करता हूं और इसलिए आया हूं कि तुम्हारे लिए उन चीजों को हलाल कर दूं जो तुम्हारे लिए हराम थी। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से एक निशानी लेकर आया हूं। अतः अल्लाह का डर रखो। और मेरी आज्ञा का पालन करो। निस्संदेह अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा रब भी, अतः अल्लाह का डर रखो। निस्संदेह अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा रब भी, अतः तुम उसी की बंदगी करो। यही सीधा मार्ग है। फिर जब ईसा (अ०) को उनके अविश्वास और इनकार का आभास हुआ तो उन्होंने कहा, कोन अल्लाह की ओर बढ़ने में मेरा सहायक होता है? हवारियों (साथियों) ने कहाः हम अल्लाह के सहायक हैं। हम अल्लाह पर ईमान लाए और गवाह रहिये की हम मुस्लिम हैं। हमारे रब। तूने जो कुछ उतारा है हम उस पर ईमान लाए और इस रसूल का अनुसरण स्वीकार किया। अतः तू हमें गवाही देने वालों में लिख ले। और वह जो चाल चले तो अल्लाह ने भी उसका तोड़ किया ओर अल्लाह उत्तम तोड़ करेन वाला है। जब अल्लाह ने कहा "ऐ ईसा । मैं तुझे अपने कब्जे में ले लूंगा। और तुझे अपनी ओर उठा लूंगा और अविशवासियों (की कुचेष्टाओं) से तुझे पाक कर दूंगा। और तेरे अनुयायियों को कियामत के दिन तक उन लोगों के ऊपर रखूंगा जिन्होंने इन्कार किया फिर मेरी ओर तुम सब को लौटना है। फिर मैं तुम्हारे बीच उन चीजों का फैसला कर दूंगा। जिनके विषय में तुम विभेद करते रहे हो। जिन लोगों ने इन्कार किया उनको दुनिया और आखिरत में कड़ी यातना दूंगा उनका कोई सहायक न होगा। रहे वे लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उन्हें वह उनका पूरा–पूरा बदला देगा। अल्लाह अत्याचारियों से प्रेम नही करता। ये आयतें है और हिकमत (ज्ञान) से परिपूर्ण , जो हम तुम्हें सुना रहे हैं। निस्संदेह अल्लाह ने उसे मिट्टी से बनाया, फिर उससे कहा, हो जा, तो वह हो जाता है। यह हक तुम्हारे रब की ओर से है तो तुम सन्देह में न पड़ना।

कुरआन में उनका चरित्र

उन्होंने कहा : मैं अल्लाह का बन्दा हूं, उसने मुझे किताब दी और नबी बनाया और मुझे बरकत वाला किया। जहां भी मैं रहूं। और अपनी मां का हक अदा करने वाला बनाया। और उसने मुझे सरकश और संगदिल नहीं बनाया। सलाम है मुझ पर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन कि मैं मरूं और जिस दिन कि जीवित करके उठाया जाऊं।

पुरानी लड़ाई

हजरत ईसा अ० के साथ भी वही हुआ जो उसे पहले नबियों के साथ हो चुका था। धनी और लीडर लोग उनसे अलग हो गए, मालदारों और बलवानों ने उनका साथ छोड़ दिया, वे हज़रत ईसा अ० पर ईमान लाना तौहीन समझते थे दुनिया में जो उनको स्थान प्राप्त था। वह उससे उतरेन को तैयार न थे अल्लाह ने कितनी सच्ची बात कही है हमने किसी बस्ती में रसूल नहीं भेजा मगर वहां के खाते पीते लोगों ने उनसे कहा कि जो कुछ तुम को देकर भेजा गया है हम उसका इन्कार करते हैं वो ये भी कहते हैं। हम माल और औलाद में तुमसे ज्यादा हैं और हमें तो अजाब भी नहीं दिया जायेगा।

आम जनता और निर्धनों का ईमान

जब ईसा अ० इन मालदारों से मायूस हो गए उनके कीना और कुफ्र को देख लिया और आयतों और मोअजेजात का इन्कार कर रहे हैं और उसको घटिया समझ रहे हैं इसलिए कि उनके अन्दर समझदारी नहीं है। हजरत ईसा अ० आम जनता और निर्धनों को दावत देने पहुंचे उन लोगों के दिल आप की बातों को सुन कर पसीज गए उनका मन गन्दगियों से पवित्र हो गया इसलिए कि वो गाढ़ी मेहनत और खून पसीने की खाते थे। वो अपने मान मरयादा प्रतिष्ठा के पीछे न पड़ते थे उन गरीबों की एक जमाअत हज़रत ईसा की दावत पर अपने आप को खुदा के सामने डाल दिया उनमें मछवारे, धोबी और दूसरे पेशे के लोग थे।

हम अल्लाह के इन्सार हैं

यह गरीब लोग हज़रत ईसा पर ईमान लाए उनके इर्द–गिर्द जमा हुए उन्होंने अपना हाथ हजरत ईसा अ० के हाथ में दे दिया कुरआन इस किस्से को इस तरह नक्ल करता है और फिर जब ईसा (अ०) को उनके अविश्वास और इन्कार का आभास हुआ

(शेष पृष्ठ ३० पर)

दारुलक़ज़ा या मैरेज एक्ट

मौ० असरारूलहक क़ासिमी

अंग्रेजी समाचार पत्र में लॉ आफिस का एक कालम नज़र से गुजरा जिसमें कुछ पाठकों ने अपनी कठिनाइयां बयान की हैं और कानूनी माहिर राजीवकुमार लूथरा ने उनके कानूनी हल बताये हैं। एक नागरिक विजय नें लिखा था कि मेरी आठ साल पहले शादी हुई थी। मेरी बीवी का व्यवहार मेरे और मेरे बच्चों के साथ बहुत ही जालिमाना और क्रूरतापूर्ण है। वह बच्चों की देखरेख से इंकार करती हैं और घर के काम काज को पूरा नहीं करतीं, यहां तक कि खाना भी नही बनातीं और मेरे मां बाप और अन्य सम्बन्धियों से बिला वजह लड़ती रहती हैं फलस्वरूप मेरे मांबाप ने मेरे घर आना बन्द कर दिया है। मेरी बीवी ने कई बार आत्मदाह की भी कोशिश की है। उसके इस व्यवहार से मुझे जेहनी तनाव होता है। अब मैं उससे तलाक लेना चाहता हूं। कृपया कोई कानूनी हल बताइये।

कानूनी विशेषज्ञ ने उत्तर में लिखा : "हिन्दू मैरेज एक्ट १९८५ के अनुसार तलाक इस बुन्याद पर हासिल की जा सकती है कि शादी के बाद प्रभावित जीवन साथी के साथ दूसरे जीवन साथी के द्वारा अत्याचारी व्यवहार इख्तियार किया गया हो। अत्याचार सम्बन्धी व्यवहार में जेहनी और शारीरिक दोनों प्रकार की यातनाएं शामिल हैं जिसके नतीजे में एक दूसरे का साथ रहना असम्भव हो परन्तु हर वह अमल जिसे ज़ेहनी तकलीफ पहुंचती हो ज़ेहनी तौर पर जुल्म व ज़ियादती में नही आता यह दिखाना पड़ेगा कि सम्बन्धित व्यक्ति के स्वास्थ पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। अपने पत्र में आप ने जो लिखा है वह जेहनी तौर पर टार्चर करने के ख़ाने में रखा जाएगा। अतएव आप अपनी बीवी से तलाक लेने के लिए पिटीशन दाएर कर सकते हैं परन्तु यह ज़रूरी होगा कि आप ठोस, काफी और संतोष जनक प्रमाण और गवाही पेश करें कि आप को जेहनी तौर पर तकलीफ़ पहुंचाई गई है।

दुसरा पत्र देवानन्द मराठे ने लिखा है उसने बताया कि "मेरी बहन की सितम्बर २००३ को सुमेर नामी व्यक्ति से शादी हुई थी फिर भी वह आजतक मेरी बहन से अकेले में नहीं मिला है और शादी का वास्तविक उद्देश्य पूरा नहीं हुआ है इसलिए कि शादी के तुरंत बाद सुमेर अमेरिका रवाना हो गया। सुमेर का व्यवहार फोन पर भी हम्र्ददाना नहीं है। वह टेलीफोन पर भी सीधे मंह बात नहीं करता और अपनी बीवी अर्थात मेरी बहन के वीजा के लिए अमेरिकी राजदूत से मिलने के लिए भारत भी आने को तैयार नहीं। उसके आए बिना मेरी बहन को वीजा भी नहीं मिल सकता। उसने अपनी बीवी को पूरी तरह छोड़ दिया है और वह इस शादी में रूचि नहीं रखता। क्या मेरी बहन सुमेर की अनुमति के बिना किसी और से शादी कर सकती है?

कानूनी विशेषज्ञ ने उत्तर में लिखा :

"केवल इस कारण कि शादी के बाद मियां बीवी में सम्भोग नहीं हुआ कानूनी शादी को निरस्त नही किया जा सकता। अतः आप की बहिन किसी और से उस समय तक शादी नहीं कर सकती जब तक मौजूदा शादी को निरस्त नहीं किया जाता या वह अपने पति से तलाक़ हासिल नही कर लेती। हिन्दू मैरेज एक्ट में शादी निरस्त करार देने की बहुत सीमित बुन्यादें हैं । फिर भी ऐसी सूरत में शादी के दो साल बीत जाने के बाद आप की बहिन इस बुन्याद पर तलाक का पिटीशन फाइल कर सकती हैं कि उसके पति ने उसे धोखा दिया और उसे छोड़ कर भाग गया है। एक दूसरा रास्ता यह भी है कि आप की बहिन सुमेर की रज़ामन्दी से अदालत में तलाक़ का प्रार्थनापत्र दे। एक और रास्ता है कि आपकी बहिन अदालत में पत्नी अधिकार का दावा करे परन्तु इस सूरत में यह साबित करना होगा कि सचमुच सुमेर ने आप की बहिन को साथ रखने से अकारण खुद को अलग कर लिया है।

इन दो पत्रों और उनके जवाबों को आप के सामने पेश करने का मतलब साफ है। भारत की आबादी १०० करोड़ से अधिक है जिसमें लगभग २० करोड़ मुसलमान हैं। २० करोड़ में से लगभग ८ करोड़ मियां बीवी के रूप में जीवन व्यतीत कर रहे होंगे। आठ करोड़ में से कोई न कोई घटना प्रकाश में आती ही है। कुछ केस अदालत में भी चले जाते हैं। अदालतों से जो फैसले आते हैं वह या तो मुस्लिम पर्सनल–लॉ के अनुसार

नहीं होते और बाज असाधारण होते हैं। ऐसी दशा में भारती मीडिया खूब उछालता है। इसलिए की उसको सही परिस्थिति की जानकारी नहीं होती। तलाक की घटनाएं ऐसे ही घरानों में पेश आती हैं जहां शिक्षा का अभाव होता है। अधिकांश मामला देहात जहां लोग शरअी नौइयत के जानकार नही होते। उन्हें इसकी भी जानकारी नहीं होती कि उनके इस अमल से इस्लाम और मुसलमानों की बदनामी होगी और इस्लाम दुश्मन मीडिया और पार्टियों को अपने जज्बात के संतोष के लिए अवसर मिल जाता है।

उपरोक्त पत्र में आप ने पति की लाचारी और जेहनी तनाव का अंदाजा लगाया होगा। वास्तविकता यह है कि उसकी जिन्दगी अजीरन होकर रह गई है। उसकी बीवी एक हमदर्द सहानुभूति करता जीवन साथी न होकर एक जालिम अन्यायी औरत बनगई। ऐसी सूरत में मैरेज एक्ट भी पति का साथ नहीं दे रहा है। उसे आसानी से ऐसी अत्याचारी और जालिम औरत से छुटकारा नहीं मिल सकता। यदि उसकी पत्नी ने आत्म हत्या कर ली। (जैसा कि वह कई बार कह चुकी है) तो न जाने पति को कब तक जेल में सड़ना पड़ेगा।

दूसरी घटना भी कम दर्दनाक नहीं है। पति मिलन की रात से पहले ही उसे छोड़ कर अमेरीका जा बसा है। मजलूम औरत अब क्या करे? यदि हिन्दू मैरेज एक्ट ऐसी रूकावटें न खड़ी करता तो आसानी से दोनों मामलात हल हो जाते।

पहले केस में पति खुद ही तलाक देकर पीछा छुड़ा लेता। दूसरे केस में पत्नी निकाह निरस्त करा लेती या उसका पति, जो उसे पसन्द नहीं करता, तलाक लिख कर भेज देता लेकिन वह ऐसा नहीं कर सकता। दोनों ही केस में मियां बीवी एक दूसरे के होकर भी एक दूसरे के नहीं हैं और दोनों एक दूसरे का बोझ ढोने के लिए मजबूर हैं। इस्लाम के पास ऐसी सभी समस्याओं का हल मौजूद है। वह ऐसे मियां, बीवी को साथ रहने पर मजबूर नहीं करता जिनका निबाह मुश्किल हो जाए। यदि दोनों मामिलों में मियां बीवी मुसलमान होते तो कभी की समस्या हल हो जाती।

पहले केस में पति खुद ही तलाक दे देता और दूसरे केस में बीवी दारुल कजा (शरअी अदालत) द्वारा निकाह निरस्त करा सकती थी। अब जरा गम्भीरता से सोच कर बताएं कि मियां बीवी की ज़िन्दगी, इस्लाम अधिक रूचिकर और आसान बनाता है या मैरेज ऐक्ट ?

(साभार राष्ट्रीय सहारा उर्दू)

आपका हुक्म है हालत पे इक नज्म लिखूं

डा० महबूब राही

यानी दरपेश सुवालात पे इक नज़्म लिखूं
फिर्का वाराना फसादात पे इक नज़्म लिखूं
हिन्द के सूब–ए–गुजरात पे इक नज़्म लिखूं
आग और खून की बरसात पे इक नज़्म लिखूं
जुल्म व बीदाद की बुहतात पे इक नज़्म लिखूं
दर्दो रंजो-गमो आफात पे इक नज़्म लिखूं
जिहल की कुहना रिवायात पे इक नज़्म लिखूं
मज्हका खेज रूसूमात पे इक नज़्म लिखूं
यास व हिर्मां की सियह रात पे इक नज़्म लिखूं
कर्बे दौरां पे गमे जात पे इक नज़्म लिखूं
कौम की मर्गे मफाजात पे इक नज़्म लिखूं
कर्ब अंगेज खयालात पे इक नज़्म लिखूं
शाने माजी के मजारात पे इक नज़्म लिखूं
आप का हुक्म है हालात पे इक नज़्म लिखूं

यानी लिखूं यहां कुछ भी नही कुछ भी नही
न अियां है यहां न निहां कुछ भी नही कुछ भी नहीं
कदे दिल, कीमते जां कुछ भी नही कुछ भी नहीं
आतिशे सोज़े निहां कुछ भी नहीं कुछ भी नही
शोरे नाकूसो अजां कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं
हुरमते लफ्ज़ो बयां कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं
शोरिशे आहो फुगां कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं
जो था निज़्दे रगे जां कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं
जुरअते अज़्मे ज़वां कुछ भी नही कुछ भी नहीं
आग है और न धुवां कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं
अम्न है और न अमां कुछ भी नहीं कुछ भी नहीं
कुछ यां है न वहां कुछ भी नहीं कुछ भी नही
कौन सी बात है किस बात पे इक नज्म लिखूं
आप का हुक्म है हालात पे इस नज्म लिखूं

(चालित)

बिस्मिल्लाह हिर्रहमानिर्रहीम

मुहम्मद (सल्ल०) और उनका सन्देश

मौ० स० सलैमान नदवी

मनुष्य के समस्त उच्च वर्गों में से केवल नबियों की जीवनी अनुकरणीय है और उनमें से विश्वव्यापी एवं स्थायी नमूना केवल अल्लाह के रसूल मोहम्मद सल्ल० की जीवनी है। यहां पर जब यह सिद्ध हो जाता है कि मोहम्मद सल्ल० की जीवनी ही विश्वव्यापी एवं स्थायी नमूना है तो प्रश्न उठता है कि उनकी विश्वव्यापी और स्थायी शिक्षा क्या है? वह संसार को क्या सन्देश देने आये और क्या सन्देश देकर गये? उनके सन्देश के वह कौन आवश्यक अंश हैं जिन की पूर्ति के लिए अल्लाह के इस अन्तिम पैगम्बर की आवश्यकता पड़ी? विश्व में अन्य पैग़म्बरों के माध्यम से जो सन्देश आये उन्हें किस प्रकार इस अन्तिम दूत ने सही और परिपूर्ण किया।

हम स्वीकार करते हैं कि दुनिया में समय समय पर नबियों के माध्यम से सन्देश आते रहे किन्तु वह सारे सन्देश किसी युग विशेष के लिए आया किये। सामयिक होने के कारण वह स्थायी न रह सके, उनका मूल (असल) नष्ट हो गया, वह युगों बाद संकलित किये गये और उनमें परिवर्तन और परिवर्धन किये गये उनके अनुवादों ने उन्हें कुछ से कुछ बना दिया। उनकी ऐतिहासिक प्रमाणिकता शेष न रही। अनेक मनगढ़न्त सन्देश उनमे जोड़ दिये गये। और यह सब, कुछ ही वर्षों के अन्दर हो गया। अगर अल्लाह का काम निरूद्देश और जतन हीन नहीं होता है उनका मिटना और नष्ट हो जाना ही उनके अस्थायी एवं सामयिक होने का प्रमाण है किन्तु जो सन्देश हजरत मोहम्मद सल्ल० के माध्यम से आया वह विश्वव्यापी और स्थायी होकर आया और इसी लिए वह जब से आया अब तक पूर्णतः सुरक्षित है और रहेगा क्योंकि इसके बाद फिर कोई नया सन्देश आने वाला नहीं अल्लाह ने किसी पूर्व सन्देश के सम्बन्ध में यह नहीं कहा कि वह परिपूर्ण हो चुका और उस की सुरक्षा का उत्तरदायित्व मुझ पर है। दुनिया के वह समस्त सहीफे जो विलुप्त हो चुके उनका गुम हो जाना ही उनके सामयिक होने की दलील है। और जो मौजूद हैं उनकी एक एक आयत (वाक्य) में ढूंढो उनके परिपूर्ण होने और उनकी सुरक्षा सम्बन्धी एक शब्द न पाओगे बल्कि उनकी त्रुटियों के संकेत मिलेंगे। इस पुष्टि में तौरेत, ज़बूर और इन्जील से अनेक उदाहरण दिये जा सकते हैं।

किन्तु हज़रत मोहम्मद सल्ल० का सन्देश अपने बाद किसी और आने वाले का पैगाम नहीं देता जो नया पैगाम लायेगा या यह कि मोहम्मद सल्ल० के पैगाम में कोई कमी है जिसको दूर करके वह इसको पूर्ण करेगा बल्कि वह अपने परिपूर्ण होने का स्वयं दावा करता है।

कुरआन में है कि "मोहम्मद सल्ल० नबूवत के क्रम को बन्द करने वाले हैं। कई हदीसों में आया है कि आपने फ़रमाया, मैं नबूवत की इमारत का अन्तिम पत्थर हूं कुर्आन की किसी आयत में किसी बाद में आने वाले पैगम्बर के लिए कोई जगह नहीं छोड़ी गई है इससे स्पष्ट है कि केवल वही ईश्वरवाणी जो हजरत मोहम्मद सल्ल० के माध्यम से दुनिया में आयी; अल्लाह का अन्तिम और अमर सन्देश है। और इसीलिए अल्लाह ने उसकी सुरक्षा का दायित्व स्वयं ले लिया है।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या पैग़ामे मोहम्मदी के अतिरिक्त कोई अन्य पैग़ाम भी विश्वव्यापी होकर आया। बनी इसराईल के यहां खुदा केवल बनी इसराईलका खुदा है। इसी लिए बनी इसराईल के नबियों और सहीफों ने कभी गैर बनी इसराईल को खुदा का पैगाम नहीं पहुंचाया और अब तक यहूदी धर्म बनी इसराईल तक ही सीमिति है। तमाम सहीफों में केवल उन्हीं को सम्बोधित किया गया है। हजरत ईसा अलै० ने भी अपना सन्देश बनी इसराईल की खोई हुई भेड़ों तक सीमित रखा और गैर बनी इसराईल को अपना सन्देश सुनाकर बच्चों की रोटी कुत्तों को देनी पसन्द न किया।" हिन्दुस्तान के वेद भी गैर आर्यों के कानों तक नहीं पहुंच सकते हैं उनके अतिरिक्त तो तमाम दुनिया शूद्र है और वहां यह ताकीद है कि यदि वेद के शब्द शूद्र के कानों में पड़ जायें तो उसके कानों में सीसा डाल दिया जाये।

पैग़ाम मोहम्मदी दुनिया में खुदा का पहला और अन्तिम पैग़ाम है जो

काले–गोरे, अरब व अज़म तुर्क व तातार, हिन्द व चीन सबके लिए हैं जिस प्रकार उसका खुदा तमाम दुनिया का पालनहार है उसी प्रकार उसका रसूल समस्त संसार के लिए रहमत है और उसका पैगाम भी समस्त संसार के लिए है।

प्रत्येक धर्म के दो खण्ड हैं, एक का सम्बन्ध मनुष्य के हृदय से और दूसरे का मनुष्य के शेष शरीर तथा धन् दौलत से है। पहले को ईमान और दूसरे को अमल कहते हैं। अमल के तीन उपखण्ड हैं एक खुदा से सम्बन्धित है जिसको इबादत (आराधना) कहते हैं, दूसरा मनुष्य के पारस्परिक कारोबार से सम्बन्धित है जिसको मुआमला (व्यवहार) कहते हैं। और जिनका बड़ा हिस्सा कानून है तीसरा मनुष्य के पारस्परिक सम्बन्धों के निर्वाह से सम्बद्ध है। इसको अख़लाक़ियात (आचरण) कहते हैं। अस्तु एतक़ादात (विश्वास), इबादात, मुआमलात और अखलाकियात धर्म के यही चार खण्ड हैं और पैग़ाम–ए–मोहम्मदी ने इन चारों को परिपूर्ण किया है।

तौरेत और इन्जील में अक़ाएद (विश्वास) का हिस्सा बिल्कुल अस्पष्ट है। इसमें खुदा के अस्तित्व तथा एकेश्वरवाद का उल्लेख है किन्तु तर्क एवं प्रमाण से खाली। ईश्वर के गुण जो वास्तव में आत्मा की शुद्धता के साधन हैं और जिनके द्वारा अल्लाह की सन्निकटता और भक्ति प्राप्त हो सकती है, न तौरेत में है और न इन्जील में । तौहीद (एकेश्वरवाद) के बाद रेसालत है। रिसालत और नुबूवत की वास्तविकता, वही, इल्हाम, संवाद की व्यख्या नबियों की हैसियत, नबियों का हर कौम में होना, उनके कर्तव्य, उन्हें किस हैसियत से मानना चाहिए, नबियों की मासूमियत आदि बातें पैगाम–ए–मोहम्मदी से पूर्व के किसी पैगाम में नहीं मिलती है। जज़ा व सज़ा (करनी तथा भरनी) नर्क व स्वर्ग, प्रलय और उस दिन सबका पुनः जीवित होना– तौरेत में इन के अत्यन्त धुन्धले संकेत मिलते हैं। इन्जील में एक यहूदी के उत्तर में इन महत्वपूर्ण बातों के समबन्ध में एक दो वाक्य मिलते हैं, एक दो स्वर्ग तथा नर्क से सम्बन्धित भी हैं किन्तु पैगाम–ए–मोहम्मदी में हर चीज स्पष्ट और पूर्ण विवरण के साथ मौजूद है।

फरिश्तों की परिकल्पना तौरेत में भी है किन्तु अस्पष्ट। कभी कभी यह समझना कठिन हो जाता है कि तौरेत में खुदा का वर्णन हो रहा है या फरिश्तों का। इंजील में एक दो फरिश्तों के नाम आते हैं। वहां जिब्रील की हैसियत इतनी सन्देहास्पद है कि न उसको फिरिश्ता कह सकते हैं न खुदा या यूं कहो कि उसको फरिश्ता भी कह सकते हैं और खुदा भी। किन्तु पैग़ाम–ए–मोहम्मदी में फरिश्तों की वास्तविकता बिल्कुल स्पष्ट है उसमें उनकी हैसियत निर्धारित कर दी गई है, उनके काम बता दिये गये हैं। खुदा से पैगम्बरों से और सृष्टि से उनका सम्बन्ध खोल कर बता दिया गया है।

अब भाइयो ! कर्म पर विचार करें। कर्म का पहला खण्ड इबादात है। तौरेत में कुरबानी का विस्तृत वर्णन है तथा उसके प्रतिबन्धों व गरिमा की विस्तृत व्याख्या है। रोजों का भी उल्लेख आया है। दुआयें भी की गई हैं। बैतुल्लाह (अल्लाह का घर) का नाम भी आता है किन्तु यह तमाम चीजें इतनी धुंधली हैं, कि उन पर लोगों की नजर भी नहीं पड़ती। यहां न तो इबादात का विभाजन है और न उनके तरीके और आदाब बताये गये हैं और न उनका समय निर्धारित किया गया है और न खुदा की याद और दुआओं की निश्चित शिक्षा दी गई है, न कोई दुआ बन्दे को सिखाई गई है। जबूर में खुदा की दुआयें और मुनाजातें (ईशवन्दना) बड़ी संख्या में हैं किन्तु इबादात के तरीके, आदाब, समय तथा अन्य बातों का पता नहीं। इन्जील में इबादात का बहुत कम बल्कि बिल्कुल वर्णन नहीं है। एक स्थान पर हजरत ईसा अलै० के चालीस दिन के फाके का उल्लेख है ..... रोजा कह लो। यहूदियों की यह आपत्ति भी इन्जील ही में है कि, " क्यों तेरे शिष्य रोजे नही रखते," सूली वाली रात में दुआ करने की बात आई है और वहीं एक दुआ भी सिखाई गई है किन्तु अन्य इबादात का वहां कोई उल्लेख नहीं है। परन्तु इस्लाम के पैगाम में हर चीज साफ और स्पष्ट है। (जारी)

हक आ गया और बातिल मिट गया बातिल तो मिटने वाली चीज ही है। (बनीइस्राईल : ८१)

अनुवाद : मोहम्मद हसन अंसारी

ऐ अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

सऊदी अरब का पहला एलेशन नवम्बर में

सऊदी अरब देश में पहला चुनाव नवम्बर में कराने का इरादा रखता है। पहले स्तर पर स्थानी इकाइयों के चुनाव कराए जाएंगे जो। यह शहंशाहियत में ठोस राजनीतिक सुधार की पहली मिसाल होगी। पहले मरहला का चुनाव रियाज में रमजान केबाद होगा।

दूसरे मरहला में देश के पूर्वी और दक्षिणी तथा अंतिम मरहला में देश के बाकी भागों में हज के बाद सम्पन्न होगा।

यह चुनाव अमरिका और सुधारवादियों के दबाव के बाद पहली बार कराया जा रहा है। सऊदी अरब में शहंशाहियत का विरोध करने वाले ग्रुपों की बढ़ती हुई हिंसा के कारण भी शासकों पर राजनीतिक सुधार करने के लिए दबाव बढ़ा है।

शान्ति रोड मैप योजना से अमेरिका को लाभ

यूरोपीय यूनियन के एक उच्च अधिकारी ने कहा है कि पश्चिमी ऐशिया में शान्ति प्रकिया में प्रगति हुए बिना अरब दुन्या में सुधार का अमल आसान नहीं होगा जबकि अमेरिका का दृष्टिकोण यह है कि यह दोनों प्रक्रिया आज़ादाना तौर पर जारी रह सकती है। यूरोपीय यूनियन के विदेशी पालिसी के श्रेष्ट अधिकारी जीवेर सोलाना ने अरब देशों में लोकतन्त्र सुधारों से सम्बन्धित अमेरिकी योजना के बारे में एक प्रश्न का उत्तर देते हुउ कहा कि इस सिलसिले में जो भी पहल की जाए उस में शान्ति प्रक्रिया को केन्द्रीय हैसियत प्राप्त होनी चाहिए। अमेरिका शांति योजना में इस क्षेत्र की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक समस्याओं के हल करने पर ध्यान दिया गया है मगर अरब इसराइल विवाद का कोई ज़िक्र नहीं है जिस के बारे में अरबों का विचार है कि क्षेत्र की समस्याओं की असल जड़ यही है। सोलाना ने मिस्र के राष्ट्रपति हसनी मुबारक के साथ बात चीत के बाद कहा कि अरब देशों में लोकतंत्र सुधारों से सम्बन्धित कोई योजना शान्ति प्रकिया के साथ साथ लेनी चाहिए अन्यथा सफलता प्राप्त होना बहुत कठिन होगा। अधिकतर अरब देश अमेरिकी योजना के विरुद्ध है और उनका कहना है कि सुधार की मांग देशवासियों की ओर से होनी चाहिए और उपरोक्त योजना में वास्तविकहित अमेरिका का है। अरब लीग के सिक्रेटरी जनरल उमर मूसा ने कहा कि इसराईल की वजह से स्थिर्ता और सुरक्षा का जो खतरा लाहक है वह सुधार प्रकिया में बाधक बन रहा है। जब आप मध्यपूर्व ऐशियाई क्षेत्रों पर बात कर रहे हैं तो आप फिलिस्तीन की समस्या, बड़े पैमाने पर तबाही फैलाने वाले हथियारों और क्षेत्र की सुरक्षा से सम्बन्धित खतरों की अनदेखी नहीं कर सकते।

मरने से क्यों डरते हैं अमेरिकी ?

जिन्दगी के प्रति अथाह मोह के चलते कोई मरना नहीं चाहता है। लेकिन अमेरिकियों को एक और जीच भी मरने से रोकती है। वह है वहां का महंगा कफन दफन। जब किसी अमेरिकी के मरने का समय आता है तो परिजनों के हाथ पांव फूल जाते हैं और मरने पर उनका बजट ही बिगड़ जाता है।

पिछले दिनों अमेरिका में हुए एक सर्वे के अनुसार वहां मृतकों पर औसतन ५१८० डॉलर का खर्च आता है। जो लोग अपने मुर्दों को शानोशौकत से दफन करना चाहता हैं, वे करीब १० हजार डालर खर्च करते हैं।

अमेरिका में अलग–अलग कब्रिस्तानों की अलग–अलग सोसाइटियां हैं। वे अपने यहां मुर्दे को दफन करने के लिए आकर्षक स्कीमें निकालती हैं और प्रचार भी करती हैं। वे बताती हैं कि उनके यहां मुर्दा दफन करने के क्या–क्या फायदे हैं। यहां तक कि ये सोसाइटियां ताबूत, फूल, माला, खुशबू आदि सामानों का बंदोबस्त भी करती हैं।

अच्छी लकड़ी से बन एुए ताबूत महंगे होते हैं। अगर उन पर नक्काशी है तो समझिये और ज़्यादा कीमत की है। महोगनी की लकड़ी के ताबूत करीब पांच हजार डॉलर में आते हैं। ऐसे में गरीबों के लिए अपने परिजनों का अंतिम संस्कार कर पाना टेढ़ी खीर होता है। घर में किसी की मौत होते ही सबसे सस्ते कब्रिस्तान की तलाश उनकी पहली प्राथमिकता होती है।

लाइलाह इल्लल्लाह